फरवरी (द्वितीय) 2021 कीमत : 10.00 रु.

सरस सलिल

मनभावन अंदाज खरी आवाज Ⓜ

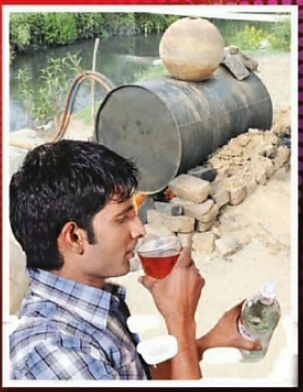

नाजायज शराब
'कंजर ह्विस्की'
पीना है रिस्की

- 5 कहानियां
- उत्तराखंड में आफत
- महिलाओं पर पाखंड का जुल्म
- सेक्स पर चर्चा जरूरी
- भोजपुरी सिने अवार्ड

कौंबो ऑफर*
सरस सलिल
संग
फार्म एन फूड
20 रु. में

VISIT…

Piramal

TETMOSOL®

टेटमोसोल से रोज़ नहाना, मतलब, त्वचा के संक्रमण^ को दूर भगाना।

डॉक्टर का सुझाया No.1 ब्रैंड#

नींबू जैसी ताज़ी महक

CMAC : TET/2020901.28

अपने सुझावों तथा सवालों के लिए, हमारे कंस्यूमर केयर अफसर से इस टोल फ्री नंबर 1800 22 9898 पर या consumercare@piramal.com पर सम्पर्क करें।

^खुजली (स्केबीज़) के कणो द्वारा हुए संक्रमण के लिए। स्थिति में सुधार न होने पर, डॉक्टर से सलाह ले। संक्रमण की संभावना तक रोज़ाना स्नान करें। #खाज और खुजली की दवाइयों की श्रेणी में डॉक्टरों द्वारा निर्धारित किया गया, MAT मई २०२० में किये गए IMS प्रिस्क्रिप्शन ऑडिट पर आधारित।

सभी प्रमुख मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध।

सरस सलिल
मनभावन अंदाज खरी आवाज
संस्थापक : विश्वनाथ (1917-2002)
फरवरी (द्वितीय) 2021
अंक : 674
सम्पादक व प्रकाशक : परेश नाथ
मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय: दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. अन्य कार्यालय: 503, नारायण चैम्बर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. जी-3, एचवीएस कोर्ट, 21, कनिंगम रोड, बेंगलुरु-560052. ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई-400031 (संपादकीय कार्यालय). बी-3, वडाला उद्योग भवन, 8, नगर्वाल ब्रास रोड, वडाला, मुंबई-400031 (विज्ञापन कार्यालय). 16-ए, अमृता कनवी रोड (फर्स्ट फ्लोर), कालीघाट, नजदीक मामुश्री सिनेमा, कोलकाता-700026. 14, पहली मंजिल, सीमांस कॉर्पोरेशन, 150/82, मांटीअथ रोड, चेन्नई-600008. 122, पहली मंजिल, चित्रय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, सिकंदराबाद-500003. फ्लैट नं. बी-जी/3, 4 रघुपार्क, लखनऊ-226001. बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फीट रोड, अशोका गार्डन साथ के पीछे, भोपाल-462011. 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, पुलियोशन रोड, पटना-800001. गौरांजली टावर, शाप नं. 114, पहली मंजिल, अजमेर रोड, जयपुर-302006. जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, कोच्चि-682031.
दिल्ली प्रेस पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. सरस सलिल में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.
दिल्ली प्रेस पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा पीएस पीसी प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित एवं ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली से प्रकाशित.
लेखकों से: छपने के लिए भेजी जाने वाली कहानी वगैरह के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा जरूर लगाएं वरना तीक न होने पर उसे लौटाया नहीं जाएगा. जो भी लिखें कागज के एक ओर साफसाफ शब्दों में लिखें. टाइप करी कहानी ज्यादा पसंद की जाएगी. ई मेल इस प्रकार हैं–
1. रचनाओं व संपर्क के लिए ई मेल: article.hindi@delhipress.in
2. रिपोर्टों व प्रेस सूचनाओं के लिए ई मेल: invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक की पत्रों के लिए ई मेल: editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ई मेल: subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE
© Delhi Press Patra Prakashan Private Limited, New Delhi-110055. India.
No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission. THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE IN COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI.

सरस सलिल पाक्षिक पत्रिका की एक प्रति की कीमत 10 रु., एक साल के लिए 535 रु., 2 साल के लिए 1069 रु. (रजिस्टर्ड डाक से)

मुख्य विक्रय: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055
मुंबई : बी-3, वडाला उद्योग भवन, दत्तात्रेय ब्रास रोड, वडाला, मुंबई-400031 फोन नं.: 91-22-24122661/43473050

सब्सक्रिप्शन और मर्कुलेशन के लिए संपर्क करें:
फोन नंबर : 91-11-41398888.
एक्सटेंशन नंबर : 119, 221, 264.
(सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक)
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप नंबर : 08588843408
Email ID : subscription@delhipress.in

कॉम्बो ऑफर*
सरस सलिल संग फार्म एंड फूड 15 रु. में
*केवल डीकर द्वारा दी गई प्रति के साथ. सीमित संख्या में.

गहरी पैठ

सरकार हर तरह के हथकंडे अपना रही है कि जन्म से पैदा हुए नीच दलित शैड्यूल कास्टों और शैड्यूल ट्राइबों को न पढ़ने को मिले, न नौकरियां मिलें और न उन की जिंदगी सुधरे. उन्हें पढ़ने को स्कूल न मिलें इसलिए हर राज्य ही नहीं, जिले के भी शिक्षा अधिकारी ज्यादातर सरकारी स्कूलों को उन इलाकों में खोलते हैं जहां उन से ऊंची जाति शूद्र जिन्हें हम पिछड़े या ओबीसी कहते हैं, ज्यादा गिनती में हों. दिल्ली की इंडियन इंस्टीट्यूट टैक्नोलौजी की एक रिसर्च टीम ने यह पाया है.

वैसे तो पिछले 6 सालों से ये बातें ही बंद हो गई हैं और आईआईटी हो या शिक्षा मंत्रालय, वहां बैठे लोग, जो ऊंची जातियों के ही हैं, किसी तरह के तथ्य ही नहीं जमा करने देते. पढ़ाई के बारे में तो वे बहुत ही सतर्क हैं क्योंकि जानते हैं कि अगर शूद्र और दलित जान गए कि उन को लगातार मूर्ख बनाया जा रहा है तो शायद विद्रोह कर जाएं.

पढ़ाई का मौका न देना दलितों को पुश्तैनी कामों में धकेलने का सब से आसान तरीका है जहां कम पैसे में मेहनत का काम लिया जा सकता है. लड़कों से खेतोंकारखानों में काम कराया जाता है और लड़कियों को या तो बच्चे पैदा करने की मशीन बना लिया जाता है या फिर दूसरों के घरों में काम के लिए भेज दिया जाता है. यहां वेतन सुविधाएं भी कम मिलती हैं और किसी तरह ऊंची जगह पहुंचने के मौके भी कम. ऊंची जातियां इसीलिए स्कूलों की जगह मंदिर बनवाने पर जोर देती हैं ताकि ऊंचे लोगों को मिलबैठ कर साजिश करने की तो जगह मिल जाए पर झोंपड़ियों में रहने वाले अपने खाने के इंतजाम में लगे रहें.

जो सरकारी स्कूल दलितों के इलाकों में खुल भी जाते हैं उन का हाल बुरा रहता है. वहां ऊंची जाति के मास्टर पढ़ाते नहीं सेवा करातें हैं. अच्छे बच्चों को जलील करते हैं. ड्रौप आउट यानी स्कूल छोड़ने वाले इन्हीं स्कूलों में ज्यादा होते हैं. अगला खाना कैसे पकेगा, इस के लिए मांबाप भी बच्चों को स्कूल भेजने की जगह कागजपत्थर, लकड़ियां बटोरने के लिए भेज देते हैं. लड़कियां अमूमन दबंगों की चपेट में आ जाती हैं और जल्दी ही छोटे सुखों के लिए स्कूल को पढ़ाई की जगह बिस्तर की पढ़ाई सीख लेती हैं.

आईआईटी ने पाया है कि बिहार के 777 शैड्यूल ट्राइब बहुल इलाकों में केवल 11 स्कूल हैं. उत्तर प्रदेश का भी यही हाल है. मध्य प्रदेश में केवल 6 फीसदी सैकेंडरी स्कूल दलित इलाकों में हैं. मध्य प्रदेश में भी 15,843 गांव ज्यादा दलित हैं केवल 965 सैकेंडरी स्कूल हैं. देश के शासकों के राज्य गुजरात में 54 दलित बहुल गांवों में सिर्फ 2 सैकेंडरी स्कूल हैं. जब दलित बच्चों को 10-20 मील दूर सैकेंडरी स्कूल में जाना होता है, वह भी पैदल क्योंकि वे बस का पैसा नहीं खर्च कर सकते, उन का पढ़ाई में क्या मन लगेगा.

यह सब साजिश के तौर पर हो रहा है और दलितों और गरीब पिछड़े सोच रहे हैं कि गांव में किसी ऐरेगैरे देवता का मंदिर बना कर उन्होंने अपना अगला जन्म सुधार लिया. लानत है इन के नेताओं पर, इन के चौधरियों पर और इन बिरादरियों के सरकारी मुलाजिमों पर.

***

आजकल थोड़ी पढ़ीलिखी लड़कियों के लिए नर्स बनने का प्रोफैशन सब से अच्छा बनता जा रहा है. ऊंची जातियों की नर्सें तो अब अपने बच्चों को डाक्टर बना देती हैं और इसलिए छोटी जातियों की नई लड़कियां के लिए ये अच्छे मौके मिल रहे हैं. देश में बढ़ती बीमारियों, बढ़ते बूढ़ों की संख्या और भारी तकनीक वाली दवाओं के युग में कम बच्चों वाले घरों में ये नर्सें आसानी से खपने लगी हैं. अस्पतालों की गिनती देश में वैसे ही बढ़ रही है, ऊपर से कोविड 19 ने अपने तेवर दिखा कर नर्सों को एक और रास्ता सुझा दिया है.

हाल यह है कि अब दूसरे देश भारत की नर्सों को मोटा पैसा दे कर ले जाने लगे हैं क्योंकि वहां की पढ़ीलिखी लड़कियां यह काम नहीं करना चाहतीं. वे तो फाइनैंस और मार्केटिंग या रिसर्च में जा रही हैं. हमारी नर्सों को इस काम में आजादी भी मिलती है और वह इज्जत भी जो वे कहीं और नहीं पा सकतीं.

भारत में 2000 तक की आमदनी पा सकने वाली लड़कियों को अरब देशों में 1,50,000 की नौकरियां मिलने लगी हैं और इस के साथ ही उन्हें आजादी भी मिलती है.

डर यह है कि भारत सरकार जो दलितों को गुलाम बना कर रखना चाहती है नर्सों पर रोकटोक लगा सकती है. भारत सरकार के लिए यह कहना बेहद आसान और आम है कि इन लड़कियों को तो सैक्स धंधे के लिए ले जाया जा रहा है और इसलिए उन का पासपोर्ट ही न बने और न ही बाहर जाने की इजाजत मिले. फिर उन्हें किश्तियों में बैठ कर चुपके से जाना पड़ेगा पर पहुंचने पर तुरंत नौकरी और इज्जत दोनों मिलेंगी.

भारत सरकार पहले भी इन नर्सों की तरह सरोगेट मांओं यानी किराए की कोखों पर रोकटोक लगा चुकी है. देश में सस्ती नर्सें बची रहें और यहीं पर सस्ते में सेवा करती रहें इस के लिए हमारी सरकार कुछ भी कर सकती है. यह सरकार ऊटपटांग नियमकानून बनाने में तो पारंगत है और नर्सें बेचारी किसान थोड़ी हैं कि वे धरने पर बैठ जाएं, यह तो अब उन के नेताओं पर है कि वे अपने लोगों का सुख देखना चाहते हैं या मायावती, रामदास अठावले जैसों की तरह फेंकी मक्खन लगी रोटियां खा कर खुश रहना चाहते हैं.

नाजायज शराब 'कंजर ह्विस्की' पीना है रिस्की

भारत भूषण श्रीवास्तव

आखिरकार 4 फरवरी, 2021 को पुलिस यह उजागर करने में कामयाब हुई कि मध्य प्रदेश के मुरैना जिले में जहरीली शराब पीने से 13 गांवों के 28 लोगों की मौत हुई थी.

गौरतलब है कि जनवरी, 2021 के तीसरे हफ्ते में मुरैना में जहरीली शराब पीने से सिलसिलेवार हुई इन मौतों पर खासा हाहाकार मचा था. नतीजतन, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने 20 जनवरी, 2021 को सख्त तेवर दिखाते हुए सरकारी अफसरों के कान एक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरीए उमेठते हुए हिदायत दी थी कि नाजायज शराब के इस कारोबार को जैसे भी हो, खत्म किया जाए और आइंदा अगर नाजायज शराब से राज्य में मौतें हुईं, तो कलक्टर समेत पुलिस और आबकारी महकमों के अफसर इस के जिम्मेदार होंगे.

इस फटकार के बाद राज्य में हड़कंप मच गया और जगहजगह मारे गए छापों में नशे के कारोबार में लगे कई लोग गिरफ्तार किए गए. रायसेन जिले के सुलतानपुर थाना इलाके के गांव सेमरा कलां में पुलिस टीम पहुंची, तो वहां सन्नाटा पसरा था, क्योंकि छापेमारी की खबर नाजायज शराब बनाने और बेचने वालों को पहले ही न जाने कौन से जादू के जोर से लग चुकी थी. पुलिस के हाथ तकरीबन 5,500 लिटर लहान यानी गुड़ का घोल लगा जो शराब बनाने में इफरात से इस्तेमाल होता है.

2 फरवरी, 2021 को भोपाल से महज 30 किलोमीटर दूर तरावली और करारिया गांवों से रिकौर्ड 21,000 लिटर महुए का घोल पुलिस वालों ने जब्त किया था, जिसे ड्रमों में भर कर जमीन में गाड़ कर रखा गया था. एक दूसरी बड़ी कार्यवाही में पुलिस ने इंदौर के तकरीबन आधा दर्जन ढाबे ढहा दिए, जहां नाजायज शराब बिकती थी.

इस के पहले मुरैना के ही सेंवड़ा कसबे से सटे गांव मुबारकपुरा में भी पुलिस ने छापा मार कर हजारों लिटर कच्ची शराब नष्ट की थी. यह गांव मुरैना से 70 किलोमीटर की दूरी पर है.

2 फरवरी, 2021 को ही निमाड़ इलाके के धार जिले के नाजायज शराब बनाने के लिए बदनाम 2 गांवों छोटी बूटी और बड़ी बूटी के छापेमारी में पुलिस ने 40,000 लिटर से भी ज्यादा महुआ का घोल बरामद किया था. इन गांवों में लगी शराब की 200 भट्ठियां तोड़ते हुए पुलिस ने 550 लिटर शराब भी जब्त की थी. ये दोनों गांव इंदौरमुंबई हाईवे पर 10 किलोमीटर में बसे हुए हैं.

निमाड़ इलाके के ही शहरों सनावद, बड़वाह, महेश्वर और कसरावद के कई गांवों में छापा मार कर पुलिस और आबकारी महकमे ने 4,000 लिटर महुए का घोल नष्ट किया था और 60 लिटर भट्ठी की बनी नाजायज शराब भी जब्त की थी.

ग्वालियर के नजदीक डबरा के एक छापेमारी में 50 लाख रुपए की कीमत की कच्ची शराब और गुड़ का घोल जब्त किया गया था. महाकौशल इलाके के जबलपुर में भी 100 लिटर कच्ची शराब और उस से दोगुनी तादाद में घोल जब्त किया गया था.

विंध्य इलाके के रीवां जिले के डिहिया गांव में 650 लिटर महुए का घोल, 50 किलोग्राम यूरिया और भारी तादाद में कच्ची शराब बरामद की गई थी. यहां तो शराब माफिया के हौसले इतने बुलंद थे कि उस ने पुलिस टीम पर हमला कर के 5 पुलिस वाले घायल कर दिए थे.

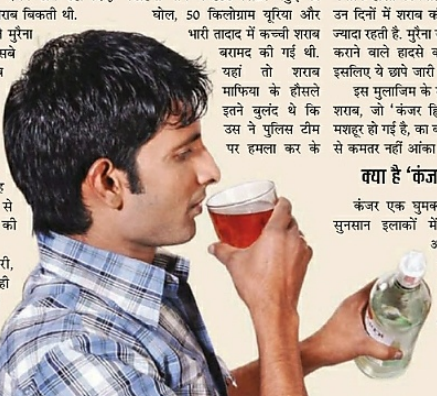

छापे हैं छापों का क्या

ऐसे कई छपे मुरैना के हादसे के बाद मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के बिगड़े मूड के चलते राज्य के हर इलाके में पड़े, लेकिन इन से नाजायज शराब की समस्या हल हो गई या हल हो जाएगी, ऐसा कहने की कोई ठोस वजह नहीं है, क्योंकि नकली शराब का कारोबार असली शराब के मुकाबले कहीं ज्यादा और बड़ा है.

फर्क इतना भर है कि असली यानी लाइसैंसी शराब फैक्टरियों और कारखानों में बनती है, जबकि नाजायज शराब कोनेकोने में खासतौर से देहाती और उस में भी आदिवासी इलाकों में ज्यादा बन रही होती है. ऐसा भी नहीं है कि इन छापों से नाजायज शराब के कारोबार पर बहुत ज्यादा फर्क पड़ा हो.

भोपाल के शिवाजी नगर में बने आबकारी महकमे के एक मुलाजिम की मानें तो यह चंद दिनों का तमाशा है, जो अभी कुछ दिनों तक और चलेगा, क्योंकि होली का त्योहार नजदीक है और उन दिनों में शराब की मांग और खपत ज्यादा रहती है. मुरैना जैसे कोई किरकिरी कराने वाले हादसे का दोहराव न हो, इसलिए ये छापे जारी रहेंगे.

इस मुलाजिम के मुताबिक, नाजायज शराब, जो 'कंजर ह्विस्की' के नाम से मशहूर हो गई है, का बाजार जायज शराब से कमतर नहीं आंका जा सकता.

क्या है 'कंजर ह्विस्की'

कंजर एक घुमक्कड़ जाति है, जो सुनसान इलाकों में बस जाती है. आजादी के पहले इस जाति के लोग आमतौर पर लुटेरे माने जाते थे. अंगरेजी हुकूमत में तो इसे बाकायदा अपराधी जाति घोषित कर दिया गया था.

कंजर शराब के धंधे में कैसे आए, इस के लिए इस जाति के गुजरे कल पर नजर डालें तो कई दिलचस्प बातें उजागर होती हैं. चूंकि ये लोग जंगलों में रहते थे, इसलिए कभी इन्हें समाज ने अपनाया नहीं, उलटे इन की हर लैवल पर अनदेखी हुई.

बदलते वक्त के साथसाथ कंजर समाज के तौरतरीकों और रहनसहन में भी बदलाव आए, लेकिन इन्हें सभ्य समाज ने कभी बराबरी का दर्जा नहीं दिया. आजादी के बाद इस जाति के लोग यहांवहां भटकते हुए जैसेतैसे गुजरबसर करने लगे.

इन के ज्यादातर बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं और जो थोड़ेबहुत जाते भी हैं, वे 5वीं या 8वीं जमात के बाद पढ़ाई छोड़ देते हैं. इन के भले के लिए वक्तवक्त पर सरकारी योजनाएं बनीं, लेकिन सरकारी अफसरों के निकम्मेपन, लापरवाही और अनदेखी के चलते वे भी इन का कोई भला नहीं कर पाईं.

लिहाजा, 30 साल पहले इस समाज के बहुत से लोग पूरी तरह शराब के धंधे में आ गए, क्योंकि खुद पियक्कड़ होने के चलते ये देशी शराब बनाने में माहिर होते हैं. शुरूशुरू में ये नकली या नाजायज शराब नहीं बनाते थे, लेकिन बाद में मुनाफे के लालच में बनाने लगे.

यह वह दौर था, जब शराब लगातार महंगी हो रही थी और गांवदेहात के बाशिंदों की पहुंच से बाहर होने लगी थी. इन की बनाई शराब लाइसैंस वाले ठेकों और दुकानों पर मिलने वाली शराब से बहुत सस्ती होती है, इसलिए उस की मांग बढ़ने लगी, देखते ही देखते इन की और दूसरों की भी बनाई गई नाजायज शराब 'कंजर ह्विस्की' के नाम से मशहूर हो गई. यह नाम पियक्कड़ों और आबकारी महकमे ने ही दिया.

स्टोमाफिट®

टैबलेट व लिक्विड

SUNCARE
A MHG GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

सुनो जी, सुबह से तीसरा प्लेट लिट्टी- चौखा खा रहे हो, सेहत बिगडी तो हमें न कहना, तुम ही खाए हो तो तुम ही सहना!!

अरी ठकुराईन, काहे घबरावत हो , अपना स्टोमाफिट है ना!! अब डर को जाओ भूल, लो स्टोमाफिट और रहो कूल!!

450ML, 200ML, 100ML, 6X10 TABLETS

निम्नलिखित कारणों से हुई कमजोरी को दूर करने में सहायक

- गर्भधारण
- हुकवार्म
- पेट में कीड़े
- मासिक धर्म
- साधारण कमजोरी
- बीमारी या संक्रमण
- बवासीर से एनीमिया
- बच्चों में कमजोरी व थकावट

हेमोकॉल

बेहतरीन स्वाद

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:info@stomafit.com

फ्री होम डिलीवरी 8447977999

Now Available on 1mg

देशी शराब का जो क्वार्टर या पौआ सरकारी ठेके पर 80 रुपए में मिलता है, उसे ये 40 रुपए में मुहैया कराते हैं.

ऐसे बनती है 'कंजर ह्विस्की'

नाजायज शराब बनाना कोई मुश्किल या टैक्निकल काम नहीं है, इसलिए इसे आसानी से बना लिया जाता है. पूरे देश के आदिवासी कच्ची शराब खुद बनाते हैं और इस बाबत उन्हें कानूनन छूट भी मिली हुई है. यह शराब महुए और गुड़ के लहन यानी घोल से भट्ठी पर बनाई जाती है. इस तरीके से बनाई गई शराब के एक पौआ यानी 180 मिलीलिटर शराब बाजार में 40 रुपए से 60 रुपए में बिकती है, जो सरकारी शराब से काफी सस्ती होती है.

भट्ठी में यह घोल गरम होता है, तो एक नली के जरीए निकली भाप को बरतन में इकट्ठा कर लिया जाता है. इसे शराब उतारना कहा जाता है.

यह देशी या कच्ची शराब जहरीली नहीं होती, लेकिन एल्कोहल की मात्रा ज्यादा होने से इस से नशा अंगरेजी शराब से ज्यादा होता है. आदिवासी और गैरआदिवासी इलाकों में हर कहीं ये भट्ठियां दिखना आम बात है.

गड़बड़ तब शुरू होती है, जब इस घोल में जानलेवा और खतरनाक कैमिकल मिलाए जाने लगते हैं. इन में यूरिया, नौसादर और औक्सीटोसिन खास हैं. इस के अलावा कच्ची शराब को और नशीला बनाने के लिए इस में धतूरा, बेशरम पेड़ की पत्तियां, सड़े संतरे व अंगूर और कुत्ते का शौच यानी मल भी मिलाया जाता है.

यह तो हर कोई जानता है कि शराब कोई सी भी हो, उस में इथाइल अल्कोहल होता है. अंगरेजी शराब यानी ह्विस्की में इस की मौजूदगी 40 से 68 फीसदी तक होती है. यह तादाद जानलेवा नहीं होती और 2-3 पैग यानी 180 मिलीलिटर में पीने वाला मानो नशे में उड़ने लगता है.

कच्ची शराब में भी यही होता है, लेकिन जब इस में ऊपर बताए कैमिकल मिला दिए जाते हैं, तो यह जहर हो जाती है, क्योंकि इस में रासायनिक क्रियाओं से जहर बन जाता है जो बेहद घातक साबित होता है. अल्कोहल के पेट में पहुंचते ही नुकसानदेह रासायनिक क्रियाएं तेज होने लगती हैं और चंद मिनटों में ही शरीर के अंदरूनी हिस्से काम करना बंद कर देते हैं.

फेफड़ों, जिगर, गुरदे और आंतों को मिथाइल अल्कोहल एक तरह से जला डालता है. इस का सीधा असर दिमाग और नर्वस सिस्टम पर भी होता है, जिस से लोग अंधे तक हो जाते हैं. जब भी जहरीली शराब से लोग मरते हैं, तो कइयों के अंधे होने की खबर भी जरूर आती है.

मध्य प्रदेश में जहांजहां बड़े छापे पड़े, वहांवहां भारी तादाद में औक्सीटोसिन और यूरिया भी मिला. इन कैमिकलों को कच्ची शराब में मिलाने से शराब सस्ती भी पड़ती है और नशा भी ज्यादा होता है, लेकिन शामत पीने वालों की होती है.

कंजरों को औक्सीटोसिन, यूरिया और बाकी दूसरे आइटम तो आसानी से मिल जाते हैं, लेकिन मिथाइल एल्कोहल मिलने में मुश्किल होती है.

मुरैना के आरोपियों के पकड़े जाने के बाद यह खुलासा हुआ था कि उन्होंने ज्यादा मुनाफे के लालच में कच्ची शराब में मिथाइल अल्कोहल मिलाया था.

इस का 200 लिटर का ड्रम 25,000 रुपए में मिलता है, लेकिन आगरा के एक कारोबारी अंतराम शर्मा ने मिलावटियों

को 5 ड्रम महज 30,000 रुपए में मुहैया कराए थे, जिस से उन के 95,000 रुपए बच गए थे.

इस लिहाज से देखें, तो जहरीली शराब से मरने वाले 28 लोगों की जिंदगी की कीमत 3,392 रुपए एक आदमी की बैठती है. यह जहर कौस्मैटिक आइटम बनाने के नाम पर खरीदा गया था.

मुख्य आरोपियों मुकेश किरार, राहुल शर्मा और खुशीराम ने इस जहरीली शराब को चखा भी नहीं था. जाहिर है कि इस का अंजाम उन्हें मालूम था. अब यह कह पाना मुश्किल है कि न केवल मध्य प्रदेश, बल्कि देशभर के नाजायज शराब बनाने वालों को यह मिथाइल अल्कोहल मिलता कहां से है, पर यह साफ दिख रहा है कि इस की खुदरा सप्लाई गांवगांव तक है.

और ऐसे बिकती है ह्विस्की

डबरा के छापों से यह उजागर हुआ था कि नाजायज यानी 'कंजर ह्विस्की' बनाना थोड़ा मुश्किल है, लेकिन इसे बेचना उस से ज्यादा आसान काम है. कंजर बाहुल्य इलाकों में औरतें और बच्चे ह्विस्की के पाउच और बोतलें हर कहीं बेचते दिख जाते हैं.

मध्य प्रदेश के भिंड, मुरैना, गुना, शिवपुरी और डबरा सहित दतिया जिले में तो औसतन हर 10 किलोमीटर पर टोकनियों में औरतें सड़क किनारे भाजीतरकारी की तरह इस की बिक्री करते दिख जाती हैं. इस के अलावा छोटे होटल और ढाबों पर भी 'कंजर ह्विस्की' की सप्लाई होती है.

लौकडाउन के दिनों में जब पियक्कड़ों को शराब के लाले पड़े थे तब नाजायज शराब इफरात से बिकी थी. पीने वाले अपनी गाड़ियां ले कर गांवदेहातों की तरफ दौड़ते नजर आए थे.

ट्रक ड्राइवर, गरीब मजदूर और किसान सस्ते के चक्कर में बिना जान की परवाह किए यह जहरीली शराब खरीदते हैं और पीते भी जम कर हैं, लेकिन जब जहर अपना असर दिखाता है तो इन के बचने की गुंजाइश न के बराबर रह जाती है और जो बच जाते हैं, वे जिंदगीभर देख नहीं पाते हैं.

नाजायज शराब बेचने वाली एक औरत दिनभर में 3,000 से 4,000 रुपए कमा लेती है, जबकि इस की लागत 300 से 400 रुपए ही बैठती है. इन के मर्द सुबह 8 बजे से ले कर दोपहर 12 बजे तक शराब बनाते हैं और उस की पैकिंग कर औरतों को सड़कों पर मोटरसाइकिल से छोड़ देते हैं और फिर चारों तरफ घूमघूम कर निगरानी करते रहते हैं. इन्हें जरा सा भी खतरा दिखता है, तो ये मोबाइल फोन के जरीए औरतों को आगाह कर देते हैं, जिस से वे छिप जाती हैं.

ईंदौर के एक सबइंस्पैक्टर की मानें, तो इन कंजरों का मुखबिर सिस्टम पुलिस से कहीं ज्यादा पुख्ता और मजबूत होता है. इन के लोग गांव के बाहर 15-20 किलोमीटर तक तैनात रहते हैं. छापों की खबर इन्हें पहले ही लग जाती है, लिहाजा ये गधे के सिर से सींग की तरह गायब हो जाते हैं और पुलिस के हत्थे भट्ठी और घोल ही आता है.

कंजरों के उन गांवों में, जहां पूरे घर शराब बनाने का धंधा करते हैं, वहां 2-4 की तादाद में पैर रखने की हिम्मत पुलिस वाले नहीं करते हैं, क्योंकि ये लोग हमला कर उन्हें खदेड़ देते हैं, इसलिए हालिया छापों की मुहिम में 40 से ले कर 100 पुलिस वालों की टीमें बनाई गई थीं, पर इस के बाद भी धंधा बदस्तूर और बेखौफ जारी है. पुलिस के जाते ही जंगलों में छिपे आरोपी फिर से आ कर शराब बनाना शुरू कर देते हैं.

तो फिर हल क्या है

भारी मुनाफे का धंधा नाजायज शराब के कारोबारी कुछ छापों के खौफ से छोड़ेंगे, ऐसा लग नहीं रहा, क्योंकि ऐसी कई मुहिम पहले भी जोरशोर से परवान चढ़ कर दम तोड़ चुकी हैं, तो फिर इस समस्या का हल क्या है, जिस से देशभर में हजारों लोग हर साल बेमौत मारे जाते हैं. इस सवाल का जवाब किसी मुख्यमंत्री या अफसर के पास नहीं है.

उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, बिहार, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड, पंजाब और हरियाणा में भी 'कंजर ह्विस्की' इसी या किसी और नाम से मध्य प्रदेश की तरह ही धड़ल्ले से बिक रही है. पकड़धकड़ की मुहिम भी हर राज्य में चल रही है, लेकिन नतीजा हमेशा ढाक के तीन पात ही निकलता है.

नाम न छापने की शर्त पर भोपाल के एक आबकारी अफसर का कहना है कि सस्ती शराब जब ज्यादा बिकने लगती है, तो नुकसान बड़े शराब निर्माताओं का होता है, इसलिए वे हम और पुलिस महकमे पर सियासी दबाव डलवाते हैं, जिस से हम लोग छापे मारने लगते हैं. लेकिन अमला कम होने से बारह महीने ऐसी मुहिम नहीं चलाई जा सकती, इसलिए फिर से नाजायज और जहरीली शराब का कारोबार जोर पकड़ने लगता है. मुरैना जैसा कोई हादसा होता है, तो हल्ला और मचता है, जिस से कुछ छोटी मछलियां पकड़ में आ जाती हैं.

यह भी हकीकत है कि शराब का महंगा होते रहना सस्ती शराब के चलन को बढ़ावा देता है. सरकार अगर शराब सस्ती करे तो उस का ही नुकसान होता है. ऐसे में बेहतर तो यही लगता है कि वह नाजायज शराब के कारोबार को जायज बनाने के रास्तों पर गौर करे.

अगर बड़े शराब निर्माता कच्ची शराब वाजिब दाम पर खरीद कर उसे अपने प्लांट में वैज्ञानिक तरीके से बनाएं, तो एक हद तक समस्या हल हो सकती है, नहीं तो 'कंजर ह्विस्की' जानलेवा होने के बाद भी बिकती रहेगी, क्योंकि इसे बनाने वालों को कोई और काम आता और भाता ही नहीं.

शराब पीने के आदी हो गए लोगों को भी ऐसे हादसों से सबक लेते हुए नाजायज शराब खरीदने और पीने से बचना चाहिए, यह सस्ती जरूर है, लेकिन रिस्की भी कम नहीं. ●

उत्तराखंड : टूटा ग्लेशियर तबाही लाया इनसानी प्रोजैक्ट

सुनील शर्मा

यह तो होना ही था. साल 2013 में केदारनाथ में बादल फटने के बाद मचे हाहाकार और जानमाल के नुकसान से भी सरकारें नहीं जागी हैं. आज भी पहाड़ों पर ऐसी विवादित परियोजनाएं चल रही हैं, जो कुदरत को मानो उकसा रही हैं अपना गुस्सा दिखाने के लिए.

उत्तराखंड के चमोली जिले में हिम ग्लेशियर टूटने से जिस ऋषिगंगा पावर प्रोजैक्ट की तबाही का रोना रोया जा रहा है, वह शुरू से ही विवादों में रहा है. इस प्रोजैक्ट पर 10 साल से ज्यादा समय से काम जारी था. पर याद रहे कि यह कोई सरकारी नहीं, बल्कि प्राइवेट सैक्टर का प्रोजैक्ट था, जिसे ले कर जम कर विरोध हुआ था.

पर्यावरण की सुरक्षा के लिए काम करने वाले सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इस प्रोजैक्ट को बंद कराने के लिए अदालत का दरवाजा तक खटखटाया था, लेकिन वे नाकाम रहे थे. उन का मानना था कि इस तरह के प्रोजैक्ट हिमालय को नुकसान पहुंचा सकते हैं और उन का डर आज सच साबित हो गया.

उधर तमाम विवादों के बावजूद ऋषिगंगा पावर प्रोजैक्ट पर बिजली का उत्पादन शुरू हो गया था और वहां 63,520 एमडब्ल्यूएच बिजली बनाने का टारगेट रखा गया था. हालांकि अभी कितना उत्पादन हो रहा था, इस की कोई आधिकारिक जानकारी मौजूद नहीं है. शुरुआती दावों की बात करें, तो यह कहा गया था कि जब यह प्रोजैक्ट अपनी पूरी क्षमता पर काम करेगा, तब यहां से बनने वाली बिजली दिल्ली, हरियाणा समेत कुछ दूसरे राज्यों में सप्लाई की जाएगी.

वैसे, ऋषिगंगा नदी पर उत्तराखंड जल विद्युत निगम के साथ प्राइवेट कंपनी के भी कई पावर प्रोजैक्ट बन रहे हैं.

इस सिलसिले में भारतीय जनता पार्टी की नेता उमा भारती ने कहा कि ग्लेशियर टूटने के चलते हुई त्रासदी चिंता की बात होने के साथसाथ चेतावनी भी है. साथ ही, उन्होंने कहा कि मंत्री रहते हुए वे गंगा और उस की मुख्य सहायक नदियों पर बांध बना कर पनबिजली परियोजनाएं लगाने के खिलाफ थीं.

नरेंद्र मोदी की अगुआई वाली पहली राजग सरकार में उमा भारती जल

Dhanwantri
Divine-9

क्या आपके साथ ऐसा तो नही ?

★जल्दी-जल्दी जुकाम या गला खराब होता है ★शरीर में कमजोरी बनी रहती है या वजन घट रहा हो
★एलर्जी, बुखार और इन्फैक्शन शीघ्र होता हो ★जल्दी-जल्दी पेट खराब होता हो।

ये सभी रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी के कारण हो सकते हैं।

Divine-9™
ADAPTOGEN IMMUNOPOTENTIATOR

एक आयुर्वेदिक औषधि है और रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाने में सहायक है, सोचना आपको है कि रोगों से लड़ना है या रोगों से घिरे रहना है।

मिलिए मेरी नई फैमिली से
जो रहे फिट हमेशा

2007 से ही अश्वगंधा, गिलोय व तुलसी औषधि Divine-9 में पहले से ही मौजूद है।

सन् 1921 से हमारे प्रसिद्ध अन्य उत्पाद सुन्दरी सुधा, स्वर्ण मधु, पाचन अमृत सुधा।

वितरक रहित क्षेत्रों में वितरक बनने हेतु सम्पर्क करें – 09258040152, 05921250052

निर्माता: धन्वंतरि फार्मास्युटिकल, काशीपुर (उत्तराखण्ड) मो0 : 07618570252, 09412245652

बिहार–0612–2673987, झारखण्ड–9771390698, उ.प्र.–लखनऊ–9415768958, इलाहाबाद–9236011955, कानपुर–9839940626, आगरा–9412166680, अलीगढ–9837843430, गोरखपुर–9336400742, बरेली–इमदाद हुसैन–9411070751, शाहजहांपुर–9450442978, मेरठ–9837270117, 0124135025, 9212771106, कोलकाता–09432485534, 07278040890, दिल्ली–9810386276, 9899161855, राजस्थान–9413381007, 9413381008, छत्तीसगढ़–9301315674, मध्य प्रदेश–उज्जैन–09826284858, इन्दौर–0731–2463274, 9098144825, भोपाल–09893257976, जबलपुर–09424686874, पंजाब–जालंधर–01679–231670, 501670, 9417331070, हरियाणा–फतेहाबाद–09812446363, रोहतक–09812341685, 09466278067, 08901387927, फरीदाबाद–01292417565

हेल्पलाइन नं. 9358256552

संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री थीं. उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा, 'इस सिलसिले में मैं ने अपने मंत्रालय की तरफ से हिमालय उत्तराखंड के बांधों के बारे में जो हलफनामा दिया था, उस में यही आग्रह किया था कि हिमालय एक बहुत संवेदनशील स्थान है, इसलिए गंगा और उस की मुख्य सहायक नदियों पर पनबिजली परियोजना नहीं बननी चाहिए.'

उमा भारती की चेतावनी 7 फरवरी, 2021 को सुबह तब सच साबित हो गई, जब नंदादेवी ग्लेशियर का एक हिस्सा टूटने से अलकनंदा की सहायक नदियों ऋषिगंगा और धौलीगंगा में विकराल बाढ़ आ गई.

अचानक उफनाई नदियों का बहाव देखते ही देखते इतना प्रचंड हो गया था कि जोशीमठ इलाके में ऋषिगंगा पावर प्रोजेक्ट और धौलीगंगा किनारे एनटीपीसी का प्रोजेक्ट पूरी तरह बरबाद हो गए. भारतचीन की सरहद पर

आईटीबीपी की पोस्ट जोड़ने वाला पुल भी बह गया. साथ ही, तकरीबन डेढ़ सौ लोगों के लापता होने की खबरें भी आईं.

रैणी गांव के लोगों ने बताया कि सुबह साढ़े 9 बजे के आसपास हिमालय के ऊपरी इलाकों से सफेद धुएं के साथ ऋषिगंगा नदी मलबे के साथ बहती दिखी. इस तेज बहाव को नदी का भयंकर शोर और भी डरावना बना रहा था.

उसी समय धौलीगंगा पर बन रहे तपोवनविष्णुगाड़ पनबिजली प्रोजेक्ट से जुड़े मजदूर काम कर रहे थे. सुबह 10 के बाद जैसे ही धौली गांव के आसपास नदी का जल स्तर बढ़ने लगा, वैसे ही गांव वालों की बेचैनी भी बढ़ने लगी.

गांव के लोगों ने प्रोजेक्ट पर काम कर रहे लोगों को आवाज दे कर और सीटियां बजा कर खतरे से आगाह भी किया, पर नदी की तेज आवाज में गांव वालों की आवाज दब कर रह गई. नतीजतन, प्रोजेक्ट का बैराज और सुरंग मलबे में दफन हो गए.

इस पानी की तबाही देखते ही देखते जंगल में लगी आग की तरह हर जगह फैल गई. इस से स्थानीय प्रशासन के बाद उत्तराखंड सरकार और बाद में केंद्र सरकार भी हरकत में आ गई. इस आपदा से ज्यादा तबाही न मचे और बाढ़ के डर को देखते हुए प्रशासन ने नीचे ऋषिकेश और हरिद्वार तक अलर्ट कर दिया.

इस आपदा में राहत की बात यह रही कि उस समय पहाड़ों पर बारिश नहीं हो रही थी और आगे में मौसम साफ रहने की उम्मीद थी. पर तबाही तो मची थी, लिहाजा, एनडीआरएफ और दूसरे संस्थानों के जवानों ने मुसीबत में फंसे लोगों को बचाने का बीड़ा उठा लिया.

हताहत होने वाले ज्यादातर मजदूर और दूसरे मुलाजिम तेलुगुभाषी बताए गए हैं, जो आंध्र प्रदेश के प्रकाशम जिले के एक इंजीनियर संजीवा रेड्डी के तहत प्रोजैक्ट पर काम कर रहे थे.

पर सवाल उठता है कि इस तरह की आपदाएं क्यों जन्म लेती हैं? अगर आबोहवा से जुड़े माहिर लोगों की मानें, तो क्लाइमेट में हो रहे बदलाव और बढ़ती गरमी के चलते ग्लेशियर टूट रहे हैं. अगर इन समस्याओं पर समय रहते ध्यान नहीं दिया गया, तो साल 2050 तक हालात और भी बदतर हो जाएंगे. जिस तरह से तरक्की के नाम में पहाड़ काटे जा रहे हैं, उस से ग्लेशियर भी सिकुड़ रहे हैं और वे अपना रास्ता भी बदलने लगे हैं.

इस के अलावा पहाड़ों पर घने और ऊंचे पेड़ देख कर मन में यह सवाल भी आता है कि जब वहां जंगलों की भरमार है, तो फिर 'चिपको आंदोलन' के अगुआ सुंदरलाल बहुगुणा और उन के 'वन सैनानियों' को कुछ पेड़ कट जाने का ऐसा क्या दर्द था, जो उन्होंने पेड़ों से चिपकचिपक कर उन्हें बचाया था?

आज जब ग्लेशियर टूट रहे हैं और उस से पहाड़ों पर नदियों का कहर बरप रहा है, तो पता चलता है कि सुंदरलाल बहुगुणा जैसे लोग कुदरत को ले कर कितना आगे की सोच रहे थे.

ऐसी ही सोच को आगे बढ़ा रहे हैं नैनीताल के ओखलकांडा ब्लौक के नाई गांव के रहने वाले पर्यावरण प्रेमी चंदन सिंह नयाल, जो अब तक 40,000 पौधे लगा कर अपना ही एक जंगल बना चुके हैं, जबकि अभी उन की उम्र महज 26 साल है.

चंदन सिंह नयाल कहते हैं कि उन के इलाके में चीड़ और बुरांश के जंगलों में आग लग रही थी. जमीन सूख रही थी. तब उन्होंने क्षेत्र में बांज के पौधे लगाने शुरू किए, क्योंकि ऐसा करना भूस्खलन रोकने में मदद करता है, साथ ही जल संरक्षण में भी अहम रोल निभाता है.

चमोली जिले में हिम ग्लेशियर के टूटने पर चंदन सिंह नयाल ने दुखी मन से बताया, 'इस तरह जाड़ों के समय ग्लेशियर का टूटना बहुत ही चिंता की बात है, क्योंकि ज्यादातर ग्लेशियर बरसात या गरमियों में ही टूटते हैं. इस साल हिमपात भी बहुत कम हुआ है, जिस वजह से ग्लेशियरों का आकार काफी कम हुआ है. यह भी इस ग्लेशियर के टूटने की एक खास वजह हो सकती है. साथ ही, इस साल मध्य हिमालय और उच्च हिमालयी इलाकों में पिछले कई महीने से भीषण आग लगी हुई थी. यह गरमी भी ग्लेशियर टूटने की एक वजह हो सकती है.

'तेजी से चलता विकास का काम, लगातार कठोर चट्टानों पर ब्लास्टिंग कर के सड़क बनाना, ऊंचे पहाड़ों पर लगातार तोड़फोड़ की जा रही है, जिस से हिमालय को बहुत बड़ा नुकसान हुआ है. जिस इलाके में यह आपदा आई है, वह जोन काफी सैंसिटिव है. यह नहीं कहा जा सकता कि आफत टल गई, बल्कि आगे भी कई ग्लेशियरों के टूटने का खतरा बना हुआ है.

'ग्लेशियरों में जो दरारें होती हैं, वे बर्फबारी होने पर भर जाती हैं. इस के चलते ग्लेशियर टूटने का खतरा नहीं होता. मैं यही कहूंगा कि सतर्कता बनी रहे. सरकार को इस पर गहराई से सोचने की जरूरत है और उसे आगे भी लगातार ग्लेशियरों पर नजर बनाए रखना होगा.'

जिला चमोली के गांव वाण के रहने वाले समाजसेवी हीरा सिंह बिष्ट गढ़वाली ने भी इस कुदरती कहर पर गहरी चिंता जताई. उन्होंने बताया, 'कई बार बहुत ज्यादा बर्फबारी से पहाड़ी नदियां या झीलें जम जाती हैं और ग्लेशियर नदी का बहाव रोक देती हैं. इस वजह से भी झील बड़ा ग्लेशियर बन जाती है, जिस के टूटने या फटने का डर बना रहता है.

'मैं आप को एक जानकारी और दे दूं कि चमोली जिले का रैणी गांव जो जोशीमठ के तपोवन से आगे है और जहां यह हादसा हुआ है, वह 'चिपको आंदोलन' से जुड़ी गौरा देवी की ससुराल है. उन का जन्म साल 1925 में चमोली जिले के लाता नामक गांव में हुआ था. उन्होंने 5वीं जमात तक पढ़ाई की थी. सिर्फ 11-12 साल की उम्र में उन की शादी रैणी गांव के मेहरबान सिंह नाम के आदमी से हुई थी. गौरा देवी ने अपने इलाके के पेड़ों को कटने से बचाने के लिए बहुत बड़ी मुहिम चलाई थी.

'साल 1986 में गौरा देवी को तब के प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने पहला 'वृक्षमित्र पुरस्कार' दिया था. वे 'चिपको आंदोलन' की शुरुआत करने वाली महिलाओं में आगे मानी जाती थीं.'

'पलायन : एक चिंतन' समूह के रतन सिंह असवाल ने बताया, 'हम कुदरती आपदा को रोक तो नहीं सकते, पर उस से होने वाले जान और माल के नुकसान को कम जरूर कर सकते हैं. उत्तराखंड कुदरती आपदाओं से घिरा एक पर्वतीय राज्य है, लिहाजा वहां डौप्लर (वैदर राडार) सिस्टम की बेहद जरूरत है, जो भूकंप आना, बादल फटना, ग्लेशियर का टूटना जैसी चेतावनियां समय रहते दे दे, जिस से नुकसान को कम से कम किया जा सके.

'हमारे यहां बड़ेबूढ़ों की कहावत है कि बांसुरी की धुन से नहीं पर इनसानी आवाज के शोर से पहाड़ों पर बर्फ दरक जाती है. पहाड़ों पर जो यह मशीनी शोर बढ़ा है, वह भी इस तरह की आपदाओं को न्योता देता है. केदारनाथ त्रासदी के बाद राज्य में डौप्लर (वैदर राडार) सिस्टम की सख्त जरूरत बताई गई थी, पर अभी भी इस सिस्टम पर ज्यादा काम नहीं हो पाया है, जो चिंता की बात है.'

बहरहाल, ग्लेशियर टूटने की यह घटना हम सब के लिए सबक है कि तरक्की के नाम पर मची इस आपाधापी में हम कुदरत को उतना ही छेड़ें, जिस से वह दर्द के मारे बिलबिलाए नहीं. भारत ही नहीं, बल्कि दुनियाभर में कुदरत अपना गुस्सा जाहिर करती रहती है. अभी तो वह छोटे स्तर पर चेतावनी दे रही है, पर अगर कहीं यह बड़े स्तर पर होने लगेगा तो इस धरती पर इनसान और दूसरे तमाम जीवों की हस्ती मिटते देर नहीं लगेगी. ●

महिलाओं पर जोरजुल्म जड़ में धार्मिक पाखंड

वेणी शंकर पटेल 'ब्रज'

मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले में एक छोटा सा गांव है, मुहारी खुर्द. वहां नवरात्र शुरू होते ही गांव के लोगों ने चंदा इकट्ठा कर के दुर्गा की मूर्ति की स्थापना की थी. मूर्ति के विसर्जन के बाद 28 अक्तूबर, 2020 को गांव में कन्या भोज चल रहा था. आयोजक गांव की लड़कियों को खीर, पूरी, हलवा परोस रहे थे.

उस कन्या भोज में गांव के बृजेश पांडे की 17 साल की बेटी चांदनी भी आई थी. वह पंडाल में भोज के लिए बैठी ही थी कि पंडित नाथूराम शास्त्री की नजर उस पर पड़ गई.

चांदनी को पंडाल में देख कर नाथूराम भड़क गया और उसे डांटते हुए बोला, "तू कैसे कन्या भोज के लिए आ गई? तुम तो समाज के नाम पर कलंक हो. तुम्हारे परिवार पर तो गौहत्या का पाप लगा है."

पंडित नाथूराम की डांट से चांदनी घबरा गई और बिना भोजन किए अपने घर आ गई. रोरो कर उस का बुरा हाल था. उसे बारबार 4 महीने पुराना वह वाकिआ याद आ रहा था, जब उस के खेत में गाय का बछड़ा घुस आया था. खेलखेल में उस के भाई ने बछड़े के गले में एक रस्सी फंसा कर खूंटी से बांध दिया था.

मगर रस्सी के फंदे में फंस कर उस बछड़े की मौत हो गई थी. जब गांव वालों को बछड़े की मौत की जानकारी लगी, तो पूरे गांव ने उन्हें गौहत्या का दोषी मान लिया.

चांदनी के परिवार ने समाज से बाहर किए जाने के पंचायत के फैसले के बाद इलाहाबाद जा कर गंगा स्नान और पूजापाठ करा कर गांव के लोगों के लिए भंडारा भी किया था, लेकिन गांव का पंडित नाथूराम शास्त्री चांदनी के परिवार से जुर्माने के तौर पर 51,000 रुपए देने के लिए जोर डाल रहा था.

परिवार की माली हालत ठीक नहीं होने की वजह से वे लोग जुर्माने की रकम अदा नहीं कर पाए, इस से दबंगों की पंचायत ने उन्हें समाज से बाहर निकाल दिया.

नवरात्र के भंडारे में अपने साथ पढ़ने वाली लड़कियों समेत जब चांदनी कन्या भोज के लिए पहुंची, तो पंडित नाथूराम शास्त्री ने उसे समाज का कलंक कह कर बेइज्जत कर दिया.

पंडित नाथूराम की इस बेरुखी से दुखी हो कर 17 साल की चांदनी जब घर आई, तो घर के सभी लोग खेतखलिहान में थे. बेइज्जती का घूंट पी कर आई चांदनी ने खुद पर केरोसिन छिड़क कर आग लगा ली.

आग की लपटों के बीच चीखतेचिल्लाते उस की मौत हो गई. इस की खबर जैसे ही पंडित नाथूराम को लगी, तो वह गांव से फरार हो गया.

दरअसल, देश में महिलाओं पर होने वाले इस तरह के जोरजुल्म की जड़ में धार्मिक कर्मकांड और पाखंड एक बहुत बड़ी वजह है. नवरात्र में कन्या पूजन कर देवी आराधना का ढोंग किया जाता है और मौका मिलते ही उन्हें हवस का शिकार बनाया जाता है.

धर्म के नाम पर महिलाओं पर होने वाले जोरजुल्म की यह घटना कोई नई बात नहीं है. 9 दिन चलने वाली दुर्गा पूजा के आयोजन में मूर्तियों की स्थापना में लाखों रुपए चंदा जमा कर के धर्म और भक्ति का ढोंग किया जाता है और देवी दर्शन को निकली लड़कियों और महिलाओं के साथ समाज और धर्म के ठेकेदारों द्वारा बुरा बरताव किया जाता है.

धर्म के इन ठेकेदारों को केवल 9 दिनों तक लड़कियों में देवी का रूप दिखाई देता है और साल के बाकी दिनों में उन्हें बलात्कार और यौन शोषण का शिकार होना पड़ता है.

महिलाओं में माहवारी के दौरान पंडेपुजारियों द्वारा उन्हें अछूत मान कर मंदिरों में घुसने नहीं दिया जाता और उन्हें तरहतरह के व्रतउपवास, कथापूजन में उलझा कर मोटी दक्षिणा मांगी जाती है.

और भी दकियानूसी परंपराएं

आज के वैज्ञानिक युग में भी गांवकसबों से ले कर शहरों तक में दकियानूसी परंपराएं समाज में कायम हैं, जिन के नाम पर ही धर्म की दुकानें चल रही हैं. अनजाने में ही अगर गायबिल्ली और गिलहरी की मौत किसी वजह से लोगों के घरों में हो जाती है, तो इसे पाप समझा जाता है और गांव के पंडेपुजारी इस दोष के निवारण के लिए भोजभंडारे के साथसाथ दानदक्षिणा भी ऐंठते हैं.

अपनेआप को गाय का रक्षक मानने वाले लोग आवारा घूमती गायों के लिए चारापानी का इंतजाम नहीं कर पाते हैं, लेकिन गाय की मौत पर हायतोबा मचा देते हैं और गाय की तस्करी करने वालों को मौब लिंचिंग का शिकार बना देते हैं.

गांव के पंडेपुजारियों द्वारा तथाकथित मांगलिक कामों में विधवा औरत को शामिल होने को अशुभ मानते हैं और धर्म का डर दिखा कर उन्हें दोबारा शादी करने से रोका जाता है.

धर्मग्रंथ भी कम नहीं

हमारे धर्मग्रंथों में महिलाओं से दोहरे बरताव के किस्से भरे पड़े हैं. एक तरफ कहा जाता है कि जहां नारी की पूजा की जाती है, वहां देवताओं का निवास होता है, तो दूसरी तरफ यही देवता नारी की देह का सुख लेने को लालायित रहते हैं.

इंद्र द्वारा गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या के साथ छल कर के शारीरिक संबंध बनाने की कथा पुराणों में लिखी है. धर्म की सीख देने वाले ऋषिमुनि भी दो कदम आगे ही रहे हैं.

ऋषि पराशर ने मछुआरे की लड़की सत्यवती से नौका में संभोग कर अपनी वासना की आग बुझाई थी. इसी वजह से 'महाभारत' लिखने वाले वेद व्यास का जन्म हुआ था. ये वही वेद व्यास हैं, जिन्होंने अंबे, अंबालिका और उन की दासी के साथ शारीरिक संबंध बनाए, जिस से पांडु, धृतराष्ट्र और विदुर जैसे पुत्र पैदा हुए.

धर्म महिलाओं को पुरुषों के अधीन रहने की ही सीख देता है. किसी भी धर्मग्रंथ की कहानियों में उपदेश यही दिया जाता है कि पत्नी पति के जोरजुल्म को सहन कर भी पति को परमेश्वर मानती रहे. धर्मगुरुओं की भूमिका भी समाज को रास्ता दिखाने के बजाय अपने स्वार्थ की पूर्ति की ज्यादा रही है.

धर्म का अनुसरण सब से ज्यादा महिलाएं ही करती आई हैं, इसी का फायदा हमारे धर्मगुरुओं ने उठा कर उन्हें अपनी हवस का शिकार बनाया है.

हमारे धर्मगुरु आज भी इस परंपरा को निभा रहे हैं. आसाराम, राम रहीम, रामपाल, नारायण सांई, स्वामी चिन्मयानंद जैसे धर्म के ठेकेदार इस के जीतेजागते उदाहरण हैं.

हिंदू धर्म के साधुसंतों के अलावा चर्च के पादरी और मसजिदमजारों के मौलवी भी महिलाओं के यौन शोषण के मामलों में पुलिस के हत्थे चढ़ चुके हैं. चर्च महिलाओं व बच्चों के यौन शोषण के अड्डे बन गए हैं. कैथोलिक पादरियों द्वारा हजारों यौन उत्पीड़न के मामले सामने आ चुके हैं. ●

कुदरत ने हम इनसानों के भीतर सैक्स को ले कर जबरदस्त इमोशन दिए हैं. ये इमोशन इतने मजबूत हैं कि इनसान इन के बारे में सोचे बगैर नहीं रह सकता. यही वजह है कि हम अपनी सैक्स इच्छाओं को जितना दबाते चले जाते हैं या बगैर चर्चा के सही दिशा में आगे नहीं बढ़ने देते तो यह इच्छा उतने ही गलत व ओछे तरीकों से हमारे सामने आ खड़ी होती है

सैक्स के साथ चर्चा भी जरूरी

रोहित

सावधान, यह मुद्दा हमारी सोच से थोड़ा अटपटा है, तो पाठकों को सुझाव है कि मैगजीन के पन्ने को हलका सा अंदर की तरफ मोड़ लें, ताकि अगलबगल का कोई इनसान इसे पढ़ते हुए आप को न देख ले. वह क्या है न कि सैक्स से जुड़ी बातें कहीं आप को शर्मिंदा न कर दें.

माफ कीजिएगा, ऐसा इसलिए कहना पड़ रहा है कि भारत में सैक्स के बारे में हर कोई अपने भीतर इच्छा तो पालता है, लेकिन सैक्स से जुड़ी बात करते ही शर्मिंदगी से मुंह बिचकाते हुए गरदन झुका लेता है.

खैर, दिल्ली के अशोक नगर में रहने वाले जोड़े 32 साला विक्रम और 29 साला मालती की शादी को तकरीबन 8 साल बीत चुके हैं. दोनों की साल 2012 में अरेंज मैरिज हुई थी. अच्छी बात यह है कि दोनों ने एकदूसरे को पसंद किया था.

शादी के पहले साल में मालती ने एक बेटे ने जन्म दिया और एक साल होल्ड कर के अगले साल एक बेटी को. फिलहाल उन का एक भरापूरा परिवार है और वे अब आगे और बच्चे पैदा करने के बारे में नहीं सोच रहे हैं. लेकिन इस में जरूरी यह है कि उन्होंने अपने जिस्मानी रिश्ते को बच्चा पैदा करने तक खत्म नहीं किया. वे उस के बाद भी नियमित रूप से सैक्स करते रहे.

इस जोड़े ने इन 8 सालों में न जाने कितनी बार एकदूसरे की गरमाहट भरी उस छुअन को महसूस किया होगा, जो पतिपत्नी की डोर को बनाए रखने में जरूरी होती है. कितनी ही बार उन्होंने एकदूसरे के जिस्मानी सुख में गोते लगाते हुए चरमसुख का मजा लिया होगा.

जाहिर है कि जितनी बार भी उन्होंने आपसी संबंध बनाए होंगे, उन में से 99.9 फीसदी वजह शरीर का चरमसुख हासिल करना रहा होगा यानी कहा जा सकता है कि किसी मर्दऔरत के लिए सैक्स सिर्फ उन के बच्चे पैदा होने पर निर्भर नहीं करता.

लेकिन मसला यह है कि भारत में सैक्स बहुत ज्यादा निजी और गुप्त रखा गया है. यह इतना निजी होता है कि 8 साल से हर रोज एकदूसरे के साथ हमबिस्तर होने वाले विक्रम और मालती सरीखे जोड़े तक भी खुले में एकदूसरे का हाथ पकड़ने, एकदूसरे के साथ बैठने तक में हिचक जाते हैं.

वे एकदूसरे का हाथ पकड़ने को सैक्स के दायरे में रख देते हैं, क्योंकि समाज और खुद उन की नजर में सैक्स गुप्त है, तो एकदूसरे को खुले में किसी भी तरह छूना गलत है. उन को एकदूसरे को निहारना, गाल पर चुंबन लेना, तारीफ करना, सहलाना और यहां तक कि करीब आना बेहूदा लगने लगता है.

यह मसला सिर्फ कुछ लोगों का नहीं, हर घर में इस पर यही भाव आम है. खुद मेरे परिवार में ऐसा कोई पल आज तक मेरे जेहन में नहीं, जहां मेरे पिता ने मेरी माताजी का हाथ हमारे सामने थामा हो या गाल तो दूर की बात माथा भी चूमा हो. हालत तो यह है कि आज भी जब वे कहीं बाहर एकदूसरे के साथ कहीं निकलते भी हैं, तो उन में भारी असहजता होती है. यही वजह है कि मेरे पिताजी मेरी माताजी से 10 कदम आगे चलते हैं. वे पिछले 30 सालों से ऐसी ही शादीशुदा जिंदगी जीते आ रहे हैं?

सैक्स पर चर्चा है मना

भारत में 'सैक्स' व 'सैक्स पर चर्चा' को निजी रखा जाता है. यहां तक कि इस के गुप्त होने पर गर्व भी महसूस किया जाता है. इसे कथित महान संस्कृति से जोड़ दिया जाता है.

हम भारतीयों के मुताबिक सैक्स पर चर्चा करने से हमारी संस्कृति, समाज और नई पौध के नौजवानों पर इस का गलत असर पड़ता है.

भारत में सैक्स का मतलब गंदा और शर्मिंदा होने से है. ज्यादातर भारतीय अपनी चर्चा इस विषय में बहुत ही गुप्त रखते हैं. उन्हें डर होता है कि कहीं इस वजह से उन को चरित्रहीन के कैटिगरी में न डाल दिया जाए, खासकर औरतों के लिए यह शब्द ही बेशर्म है.

औरतों को इस बारे में ऐक्स्ट्रा केयरफुल रहना सिखाया जाता है. इस की ट्रेनिंग बचपन से ही घर में मां द्वारा देनी शुरू हो जाती है. उन्हें समझाया जाता है कि उन के निजी अंग पूरे परिवार की इज्जत हैं, उन्हें हर हाल में शुद्ध व पवित्र रखने की खास जरूरत है, चाहे जान ही क्यों न चली जाए.

एक अच्छी औरत या लड़की वही मानी जाती है, जो सैक्स और इस से संबंधी चर्चा से खुद को दूर रखे. यहां तक कि वे इन विषयों के बारे में सोचें तक नहीं. अगर वे कभी अपने दोस्तों में भी सैक्स संबंधी विषयों पर चर्चा करती हैं, तो उन के चरित्र पर लांछन लगने में देर नहीं लगती.

हालांकि, भारत में सैक्स को थोड़ीबहुत जगह कहीं मिलती भी है, तो वह शादी के बाद है, लेकिन उस के बावजूद भी यह इतना निजी है कि पतिपत्नी इस पर की गई चर्चा को बंद कमरों के बाहर ही नहीं आने देते. बहुत बार वे एकदूसरे से बेहतर सैक्स की इच्छा जाहिर करने से भी कतराते हैं और नए प्रयोग करने से झिझकते हैं. इस से खुद उन के जीवन में नीरसता आ जाती है, नयापन खत्म हो जाता है.

मर्द तो जैसेतैसे अपनी जरूरत पूरी कर लेते हैं, लेकिन इस का बड़ा खमियाजा औरतों को भुगतना पड़ता है. वे मर्द के सामने सिर्फ उस की इच्छा पूरी करने में रह जाती हैं और खुद की इच्छाएं अपने सीने में ही दबा लेती हैं.

इस का असर सिर्फ पतिपत्नी पर ही नहीं, बल्कि उन के बच्चों पर भी पड़ता है. मातापिता, जो अपने बच्चों को

किशोर उम्र से ही सैक्स ऐजुकेशन के जरीए बेहतर शिक्षा दे सकते हैं, वे ऐसी चर्चा घर में बच्चों के साथ करने में झिझकते हैं. यहां तक कि यह सब उन के लिए अनैतिकता और फुहड़ता के दायरे में आ जाता है. इस वजह से बच्चे इस के बारे में जहांतहां से गलत जानकारी हासिल कर लेते हैं. ये अधकचरी जानकारी उन की सैक्स लाइफ को तो खराब करता ही है, साथ ही बेहतर इनसान बनने के भी आड़े आ सकता है.

सवाल उठता है कि आखिर शादी में ढोलनगाड़े, बैंडबाजा, गुलाब के फूलों से सजे सुहागरात के बिस्तर पर चरमसुख लेने के बावजूद भारतीय लोग सैक्स से जुड़ी चर्चाओं से इतना क्यों बचते हैं?

धर्म यही सिखाता

दुनिया की अलगअलग धर्म व संस्कृतियों में अगर किसी विषय के बारे में सब से ज्यादा लिखा और समझाया गया है, तो वह यौनिकता को नियंत्रित किए जाने को ले कर है.

लंबे अंतराल के बाद आधुनिक समय में यूरोप के देशों में भले ही इस विषय में सकारात्मक बदलाव आए हों, लेकिन दक्षिण एशिया और मध्यपूर्व देशों में रूढ़िवाद अभी भी काफी हावी है.

यही वजह है कि इस विषय पर कोई भी तर्क दिए जाने को ले कर तमाम रूढ़िवादियों को यह विषय हमेशा वैस्टर्न संस्कृति का हिस्सा लगे, जबकि वे यह कह कर खुजराहो और कामसूत्र के अपने ही इतिहास का गला घोंटने का काम करते रहे हैं.

हिंदू समाज में तमाम धर्मग्रंथों और धर्म के ठेकेदारों ने मर्दऔरत के संबंधों पर नियमकानून और अनेक रोकटोक की हैं. उन्हें 'किस से सैक्स करना है', 'कब करना है' और 'कैसे करना है' कई तरीकों से कंट्रोल किया गया.

जाहिर है, सैक्स दो लोगों के बीच आपसी समझदारी और मजा लेने का विषय है. इस में दोनों का खुल कर एकदूसरे से मिलन जरूरी है, लेकिन धर्म ने इस मामले में सिर्फ मर्द को छूट दी है कि वह औरत से जिस्मानी हसरत पूरी कर ले. औरत की तमाम इच्छाएं दबा दी गईं. उन के उठनेबैठने, बोलनेहंसने, कपड़ेलत्ते और घर में कैद रखने से यौन इच्छा को नियंत्रित किया गया.

ऐसा तकरीबन सभी धर्मों के पोंगापंथियों द्वारा स्थापित करने की कोशिश की गई. यहां तक कि आज भी जहांजहां धार्मिक कट्टरपन हावी है, वहां सैक्स संबंधी चर्चाओं को हद से ज्यादा दबाने की बात की जाती रही है.

ऐसे में औरतें खुल कर अपनी बात रखने से हिचकिचाती हैं. अपनी यौन जरूरतों को कह नहीं पातीं. पति चाहे कैसा भी हो, उसी के मुताबिक खुश रहना पड़ता है. क्या आज यह सामने नहीं है कि मर्द सैक्स के लिए कहीं भी हामी भरने की आजादी रख लेता है, लेकिन औरत को इस तरह के फैसले लेने के लिए खुद को कई तरह से समझाना और तैयार करना होता है?

ऐसे में दोनों की आपसी समझदारी, जो खुल कर इस विषय को सही आधार दे सकती है, वहां धर्म की मोटी दीवार क्या इस पर आड़े आने का काम नहीं करती है?

रहनुमा ही बुझेबुझे

भारत में सैक्स ऐसा विषय है, जिस पर चर्चा हमारे द्वारा चुने गए नेता प्रतिनिधि तक नहीं करना चाहते. यहां तक कि भारतीय समाज में उन नेताओं की ही ज्यादा तूती बोलती है या लोगों द्वारा उन नेताओं पर ज्यादा भरोसा किया जाता है, जिन्होंने खुद को ब्रह्मचारी के तौर पर प्रचारित किया हो.

लोगों का मानना रहता है कि उक्त नेता की अगर पत्नी या परिवार नहीं तो वह तमाम तरह की 'मोहमाया' से दूर है और वह जनता की सच्ची सेवा कर सकता है.

एक वजह यह भी है कि आज इस तरह के नेताओं, जो खुद को मोहमाया से दूर और साधुसंत बता रहे हैं, पर लोग जल्दी से विश्वास कर लेते हैं. ऐसे में भारत में किसी नेता का खुद को सैक्स लाइफ से अलग दिखाना उस की मजबूरी भी बन जाती है और उस के नेता बनने की योग्यता भी, फिर चाहे वह भीतरखाने में कुछ भी कर रहा हो.

अमेरिका में जहां राष्ट्रपति की वाइफ को सस्सम्मान 'फर्स्ट लेडी' के तौर पर पुकारा जाता है, उन के निजी जीवन को स्वीकृति दी जाती है, वहीं हमारे देश में प्रधानमंत्री से ले कर तमाम नेता अपनी फैमिली को चर्चाओं से दूर रखने की पूरी कोशिश में जुटे रहते हैं.

यह सिर्फ संयोग नहीं हो सकता कि महात्मा गांधी से ले कर नरेंद्र मोदी तक कई नामी बड़े नेता अपने निजी जीवन के त्याग के चलते ज्यादा चर्चित रहे. वहीं अगर कोई नेता दूसरी शादी कर ले तो वह इस कारण ही आलोचना, लांछन का शिकार हो जाता है यानी कुलमिला कर समाज को अपने नीतिनियमों और विचारों से चलाने वाले नेता भी इस विषय में या तो रूढ़िवादी होते हैं या असहज हो जाते हैं या फिर वे विचारों से खुले भी हैं, जो तमाम दबाव के चलते

सैक्स संबंधी विषयों को हाथ लगाने से कतराते हैं.

यह इस बात से समझा जा सकता है कि लौकडाउन के दौरान जहां यूरोप के कुछ देश कपल्स व लवर्स के मिलने के लिए स्पैशल परमिट दे रहे थे, वहीं इन विषयों पर हमारे देश के नेताओं द्वारा सोचना तो दूर, कोई सोच ले तो उसे अधर्मी बता कर विरोध जरूर हो जाता.

बात करना है जरूरी

भारत में बच्चा पैदा होते ही भगवान या अल्लाह की देन वाले वाक्यों ने तो मांबाप का सारा क्रेडिट ही हा लिया है. ऐसे में यह कहा जा सकता है कि देश में 130 करोड़ की आबादी तो सिर्फ भगवान का नाम जपतेजपते ही पैदा हुई है.

आज भी सैक्स पर बात करते हुए हमारी ज्यादातर आबादी को ऐसी शर्म महसूस हो जाती है मानो यह सैक्स दूसरे ग्रह का विषय है, जिस का उन की जिंदगी से कोई लेनादेना नहीं. सैक्स से संबंधित तमाम सामग्रियां तक भी हमारे लिए किसी अनबुझी पहेलियों सरीखी लगती हैं.

किसी शख्स की जेब में अगर कंडोम पाया जाता है, तो वह उस के लिए शर्मिंदगी का विषय बन जाता है मानो कंडोम पास में होना अपराध हो, जबकि सोचा जाए तो यह सब से जरूरी सामग्री में से एक है. फिर वे सारी चीजें जैसे अंडरवियर, ब्रा, पैंटी, इमर्जैंसी पिल्स, सैनेटरी पैड सबकुछ हमारे लिए अजूबा चीजें बन जाती हैं.

किंतु हकीकत यह है कि भारत इस समय पूरी दुनिया में सब से ज्यादा पोर्न देखने वाला देश है. भारत में आमतौर पर 70 फीसदी इंटरनैट ब्राउजिंग पोर्न कंटैंट के लिए होती है खासकर एंड्रौयड फोन के आने के बाद भारत में तमाम रोकटोक और पाबंदियों के बावजूद पोर्न की खपत काफी बढ़ गई है. ऐसे में यह तो कहीं से नहीं लगता है कि हम लोग सैक्स नहीं चाहते, बल्कि सैक्स को ले कर सामने आए आंकड़े हैरान करने वाले हैं.

लौकडाउन के दौरान भारत में सैक्स टौयज में 65 फीसदी की बढ़ोतरी हुई.

सच तो यही है कि हम भारतीय बाद में हैं, पहले इनसान हैं. कुदरत ने हम इनसानों के भीतर सैक्स को ले कर जबरदस्त इमोशन दिए हैं. ये इमोशन इतने मजबूत हैं कि सैक्स के बारे में सोचे बगैर हम नहीं रह सकते.

यही वजह है कि हम यौन इच्छाओं को जितना दबाते चले जाते हैं या बगैर चर्चा के सही दिशा में आगे नहीं बढ़ने देते, तो ये विचार उतने ही गलत व भौंड़े तरीकों से हमारे सामने आ खड़े होते हैं. फिर इस का अंजाम 'बाल यौन शौषण', 'महिला छेड़छाड़', 'क्रूर बलात्कार', 'महिला असुरक्षा' जैसे अपराधों के तौर पर बाहिर फैला कर सामने दिखने लगते हैं, जो भारत में काफी आम हो चले हैं.

सैक्स संबंधी विषयों को चर्चा में न ला कर हम खुद के लिए दोहरापन भरे हैं. एक तरफ हमारे दिमाग में अधिकाधिक यौन इच्छाएं पलती रहती हैं, वहीं दूसरी तरफ हम इसे अधिकाधिक दबाते चले जाते हैं. यही दोहरापन इनसान की भावनाओं को कुंठित करता है.

सैक्स को ले कर गलत व आधीअधूरी जानकारी से खुद को अक्षम समझने वाले मानसिक बीमारी से घिरने लगते हैं. ऐसे में गुप्त समस्याओं का इलाज करने वालों की फौज तो बढ़ती रही है, लेकिन इलाज के चक्कर में उन्हें दरदर भटकना ही पड़ता है. यह भी हमारे देश की हकीकत है कि सैक्स की जानकारी की कमी में भारत लगातार वर्ल्ड फोरम पर एचआईवी एड्स के मामलों में ऊपर की ओर अग्रसर है. भारत में एड्स से होने वाली मौतों का भी आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है.

जरूरी है कि हमें सैक्स को ले कर अपने उसूलों को फिर से ताजा करने की जरूरत है. रूढ़िवाद बनाम आधुनिकता के इस संतुलन में थोड़ा और अधिक आधुनिक होने की तरफ बढ़ना चाहिए और सैक्स की चर्चा को वर्तमान के समय के मुताबिक अधिक अनुकूल बनाने की जरूरत है, वरना इस से जुड़ी गलत धारणाओं, अपराधों और पाखंडों को खत्म नहीं किया जा सकेगा. ●

क्या जिम जाने वाला अग्रेसिव होता है?

अंजू गुप्ता

सुनील शर्मा

कुछ साल पहले की बात है. मैं दिल्ली देहात के एक गांव में एक इंटरनैशनल पहलवान के सगाई समारोह में गया था. वहां कई नामचीन लोग आए थे और माहौल बड़ा खुशनुमा था कि अचानक वहां कुछ नौजवान लड़कों का ग्रुप आया. सभी गांवदेहात के थे, पर पैसे वाले भी दिख रहे थे.

हैरत की बात थी कि उन नौजवानों में से कइयों के पास महंगी और मौडर्न पिस्टल थीं और ज्यादातर जिम में जा कर बौडी बनाए हुए थे. उन में जो लड़का सब से बीच में चल रहा था, वह बहुत हैंडसम था और उस की बौडी के तो कहने ही क्या. उस की महंगी शर्ट से बौडी के कट्स साफसाफ दिख रहे थे.

यह सोच कर मेरे मन में सवाल उठा था कि जो लोग जिम जा कर बौडी बनाते हैं, क्या वे सभी अग्रेसिव होते हैं या हो जाते हैं? वजह, जो लड़के शादी में आए थे, वे दिखने में बदमाश जैसे नहीं थे, पर हाथ में पिस्टल और कसी हुई बौडी से ऐसा लगा था कि अगर कोई उन से पंगा लेगा तो वे उसे छोड़ेंगे नहीं.

पैसे दे कर जिम में बौडी बनाने का चलन आजकल बहुत ज्यादा बढ़ गया है. बड़े शहरों में ही नहीं, बल्कि छोटे कसबों में भी अब जिम खुलने लगे हैं. वहां ज्यादातर लड़के इसलिए बौडी बनाने जाते हैं कि दुनिया पर उन का रोब जमे, खासकर जवान लड़कियों पर. जब उन की बौडी दिखाने लायक बन जाती है, तो उन में अकड़ आ जाती है. पर क्या इस के पीछे कोई अग्रेशन होती है, जो उन्हें जिम तक ले जाती है?

इस मसले पर मुंबई के 'आइडियल बौडी फिटनैस' जिम में फिटनैस इंस्ट्रक्टर अंजू गुप्ता ने बताया, "जिम जाने से अग्रेशन का कुछ लेनादेना नहीं है, बल्कि जिम जाने से बौडी में जो बदलाव आता है, उस से तो बहुत अच्छा महसूस होता है.

कपिल गुप्ता

"अमूमन जिम जाने वाले लोग अपने रूटीन को ले कर बहुत अनुशासित होते हैं, तो शायद देखने वाले को लगे कि वे अग्रेसिव हैं.

"एक बात और है कि जब जिम जाने वाले लोग किसी स्ट्रिक्ट डाइट पर होते हैं, तो उन का मैटाबौलिक रेट बढ़ जाता है, हार्ट रेट ज्यादा हो जाती है, पर यह फिटनैस का हिस्सा है.

"लेकिन अगर हम किसी एक तरह के ऐक्सरसाइज स्टाइल को अपनाते हैं तो ब्रेन को उसी की आदत पड़ जाती है, जिस से अग्रेशन बढ़ने का डर बना रहता है, इसलिए हमेशा जिम और ऐक्सरसाइज के बारे में ही नहीं सोचना चाहिए. अपने को दूसरे ऐसे काम में बिजी रखना चाहिए, जो मन को शांत करते हैं. इस के अलावा खानपान का भी खास ध्यान रखना चाहिए."

फरीदाबाद के 47 साल के कारोबारी कपिल गुप्ता अपने कालेज के दिनों से जिम में जाने लगे थे. उन्होंने बताया, "मैं जिम में कई लोगों से मिला हूं, पर मेरी नजर में कोई ऐसा नहीं आया, जो जिम जौइन करने के बाद अग्रेसिव हुआ हो. हां, अगर कोई शुरू से ही अग्रेसिव सोच का रहा होगा, तो कहा नहीं जा सकता.

"जिम अपने शरीर को सेहतमंद रखने की ठीक वैसे ही जगह है, जैसे कोई दूसरे खेल की जगह. यहां आने वाले लोगों का मकसद यही रहता है कि वे अच्छी बौडी बनाएं और अपनी फिटनैस बरकरार रखें.

"जहां तक किसी के अग्रेसिव होने की बात है, तो अगर कोई अपने स्वभाव से अग्रेसिव है, तो वह जिम क्या कहीं भी जैसे अपने घर, औफिस, बाजार या फिर किसी दूसरी जगह वैसा ही बरताव करेगा.

"यह तो बच्चों पर भी लागू होता है. अगर किसी बच्चे में ऐनर्जी ज्यादा है, तो वह दूसरे बच्चों के मुकाबले अग्रेसिव होता है. अगर उस अग्रेसिवनैस का सही से इस्तेमाल किया जाए, तो बच्चा शांत रहता है.

"हां, अगर जिम में कोई ऐक्सरसाइज के लिए सप्लीमैंट्स लेता है, तो कभीकभार उस के साइड इफैक्ट के तौर पर ऐसे लोग अग्रेसिव हो जाते हैं,

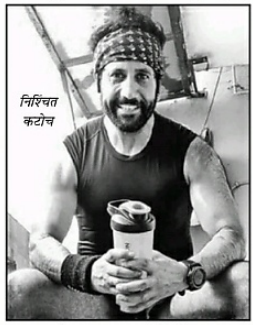

निश्चित कटोच

पर यह नहीं कहा जा सकता है कि जिम जाने वाले लोग अग्रेसिव हो जाते हैं या होते हैं."

भारत के अल्ट्रा रनर निश्चित कटोच एक समय अपने ज्यादा वजन से परेशान थे. उन्होंने अपनी लगन से खुद में इस हद तक बदलाव किया कि वे आज कईकई किलोमीटर तक आसानी से दौड़ लेते हैं. इस सब बदलाव में जिम ने बड़ा रोल निभाया है.

निश्चित कटोच ने बताया, "यह सब वर्कआउट की इंटैंसिटी पर डिपैंड करता है. हार्ड ट्रेनिंग ऐक्सरसाइज से टैस्टोस्टेरोन के कुदरती लैवल में बढ़ोतरी होती है, जिस से अग्रेशन का लैवल बढ़ सकता है. इस पर कंट्रोल करने का तरीका यही है कि वर्कआउट और इंटैंसिटी में बैलैंस बनाया जाए. गुड मैंटल हैल्थ के लिए वर्कआउट को इस ढंग से करना चाहिए कि जिम जाने वाला अग्रेसिव न हो."

इस मुद्दे पर एक बात बहुत ज्यादा अहम है कि जिम जाने वाले लोगों में से बहुत से ऐसे होते हैं, खासकर नौजवान, जो बौडी बनाने को ही जिंदगी की सब से बड़ी कामयाबी मानते हैं और उन के पास ऐसी कोई उपलब्धि नहीं होती है, जिस पर वे या उन का परिवार गर्व कर सके.

कुछ नौजवान तो पढ़ाईलिखाई में भी कमतर होते हैं. ऐसे लोग जिम जा कर अपनी बौडी बना कर उस का लड़कियों के सामने सड़क पर भी प्रदर्शन करते नजर आते हैं, पर जब उन्हें लड़कियां भाव नहीं देती हैं, तो वे अग्रेसिव हो जाते हैं.

जब से फिल्मों में हीरो द्वारा बौडी बनाने का दौर शुरू हुआ है, तब से ज्यादातर नए लड़के किसी फिल्म या टैलीविजन सीरियल के लिए आडिशन देने से पहले जिम जाते हैं, पर अगर उस के बाद भी उन्हें काम नहीं मिलता है, तो उन्हें इस बात पर गुस्सा आता है कि उन्होंने बेवजह जिम पर इतनी रकम खर्च कर दी.

बहुत से नौजवान जल्द से जल्द बौडी बनाने के चक्कर में मसल्स बढ़ाने वाली दवाओं यानी स्टेरौयड का सेवन करते हैं, जिस से उन के स्वभाव में उग्रता आती है और इसी जोश में वे ज्यादा ऐक्सरसाइज करते हैं. पर ऐसी दवाएं उन के मन और तन को नुकसान भी पहुंचाती हैं. लिहाजा, जिम जरूर जाएं, पर शरीर को मजबूत बनाने के लिए, न कि बेवजह की अग्रेशन दिखाने के लिए. ●

यूनाईटेड®

प्रेशर कुकर

देश के कुकर में ही आता है देश के खाने का स्वाद...

United Metalik Private Limited

Visit Our Website: www.unitedgrouponline.com

अयोध्या में
'सरस सलिल भोजपुरी सिने अवार्ड'
जुटेंगी फिल्मी हस्तियां

बृहस्पति कुमार पांडेय

देश में सब से ज्यादा प्रसार और पढ़ी जाने वाली दिल्ली प्रैस की पत्रिका 'सरस सलिल' द्वारा इस साल उत्तर प्रदेश के अयोध्या में दूसरे 'सरस सलिल भोजपुरी सिने अवार्ड' का आयोजन 28 फरवरी, 2021 को किया जा रहा है.

इस अवार्ड शो में भोजपुरी के जानेमाने कलाकार न केवल शिरकत करेंगे, बल्कि रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां भी देंगे. भोजपुरी सिनेमा में शानदार प्रदर्शन करने वाली फिल्मों और कलाकारों को यह अवार्ड दिया जाता है.

बीते साल इस अवार्ड शो का आयोजन उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में किया गया था, जिस में भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्री की जानीमानी हस्तियों ने हिस्सा लिया था.

इस साल यह अवार्ड शो साल 2020 में आई भोजपुरी फिल्मों के प्रदर्शन के आधार पर दिया जाएगा, जिस में फिल्मों के अलावा कलाकारों और तमाम तकनीशियनों को अलगअलग कैटेगरी में अवार्ड दिया जाएगा.

दूसरे 'सरस सलिल भोजपुरी सिने अवार्ड' में जिन फिल्मों का नौमिनेशन किया जा रहा है, उस में बैस्ट कैटेगरी का फैसला ऐक्सपर्ट की ज्यूरी कर रही है.

इन की रहेगी मुख्य भूमिका

'सरस सलिल भोजपुरी सिने अवार्ड' में मुख्य भूमिका अयोध्या महोत्सव न्यास के अध्यक्ष हरीश श्रीवास्तव निभा रहे हैं. उन्होंने इस आयोजन को कामयाब बनाने में सभी जरूरी संसाधनों को मुहैया कराने के साथ ही कलाकारों के ठहरने और सुरक्षा संबंधी सारी व्यवस्थाएं भी अपनी तरफ से की हैं.

फिल्म हीरो शुभम तिवारी और हीरोइन डाक्टर माही खान इस कार्यक्रम के एंकरिंग की जिम्मेदारी निभा रहे हैं. भोजपुरी गायक और हीरो विवेक पांडेय इस अवार्ड शो में सहसंयोजक की भूमिका में हैं. वे दूसरे तमाम भोजपुरी कलाकारों के साथ समन्वय करने के साथसाथ उन्हें निमंत्रण देने की जिम्मेदारी भी निभा रहे हैं.

कलाकारों ने की तारीफ

जानेमाने भोजपुरी सुपर स्टार दिनेश लाल यादव 'निरहुआ' ने इस सिलसिले में कहा कि वे 'सरस सलिल' पत्रिका के आज भी नियमित पाठक हैं. उन्होंने इस आयोजन के लिए अपनी शुभकामनाएं दीं.

फिल्म डायरैक्टर संजय श्रीवास्तव ने कहा कि इस साल का 'सरस सलिल भोजपुरी सिने अवार्ड' ऐतिहासिक साबित होगा. 'सरस सलिल' पत्रिका द्वारा भोजपुरी सिनेमा के लिए किया जाने वाला यह प्रयास बेहद ही सराहनीय है.

नवोदित भोजपुरी कलाकार विमल पांडेय ने कहा कि बीते साल 'सरस सलिल' ने भोजपुरी सिनेमा के लिए जो शुरुआत की थी, वह अपने एक नए मुकाम की तरफ बढ़ रही है.

फिल्म डायरैक्टर पराग पाटिल ने इस आयोजन के सफलता की कामना की. फिल्म निर्माता किशोर यादव ने इस अवार्ड को ले कर कहा कि 'सरस सलिल' पत्रिका ने भोजपुरी सिनेमा को आगे बढ़ाने में अपने लेखों और इंटरव्यू के जरीए एक अलग ही भूमिका निभाई है.

इस के अलावा शुभकामनाएं देने वालों में राज प्रेमी, यश मिश्रा, देव सिंह, पूनम दुबे, सोनालिका प्रसाद, गुंजन पंत, अनूप अरोड़ा, राहुल श्रीवास्तव, लोटा तिवारी, धामा वर्मा, कृष्णा कुमार, बालेश्वर सिंह, समर्थ चतुर्वेदी, संजना राज, शैलेंद्र श्रीवास्तव, सुप्रिया प्रियदर्शनी, कनक पांडेय, सीपी भट्ट, संजना सिल्क, रविशंकर मिश्र, प्रिंस सिंह राजपूत, देवी कुमार, रूपा सिंह, कनक यादव, वीरू यादव, अरुण राज समेत सैकड़ों भोजपुरी कलाकार शामिल हैं.

रंगारंग नाइट में होगा धमाल

इस अवार्ड शो में जहां एक तरफ भोजपुरी फिल्मों और फिल्मी हस्तियों को अवार्ड दिया जाएगा, वहीं दूसरी तरफ 28 फरवरी की शाम 6 बजे से डांस, गाने और कौमेडी नाइट्स से भी धमाल मचेगा.

इस अवार्ड शो में दर्शकों की ऐंट्री फ्री होगी, लेकिन इस के लिए उन्हें अपने साथ निमंत्रणपत्र जरूर लाना होगा. ●

पल-पल जीवन में आनन्द अविरल

बैद्यनाथ

SHREE BAIDYANATH AYURVED BHAWAN PVT. LTD. CALCUTTA PATNA

100 years of caring

वीटा-एक्स गोल्ड

स्वर्ण भस्म की ताकत से भरपूर

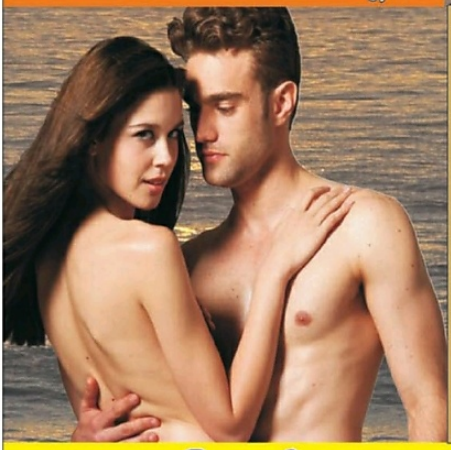

अब मर्दाना जोश, हर बार...बार-बार

SHREE **Baidyanath** AYURVED BHAWAN PVT. LTD., PATNA

Customer Helpline No.:+91 8252224135, info@baidyanathayurveda.com, Web : www.baidyanathayurveda.com

एक हसीं भूल...

शुभम पांडेय गगन

हर बार की तरह आज भी बड़ी बेसब्री के बाद यह त्योहार वाला दिन आया है. पूरा ऑफिस ऐसे खाली है, जैसे कोई बड़ा सा गुल्लक, लेकिन उस में एक भी चिल्लर न हो.

आज मैं भी बहुत खुश हूं. आखिरकार पूरे 8 महीने बाद घर जा रहा हूं, जहां मां, पत्नी और अपनी ससुराल से अगर दीदी आई होंगी तो मेरा इंतजार कर रही होंगी.

सब से खास बात यह कि त्योहार भी होली का ही है. हर तरफ खुशी का माहौल है. दुकानों पर रंगगुलाल बिकने लगे हैं.

बच्चों का झुंड भूखे भेड़ के झुंड की तरह रंगों पर टूट पड़ा है. अजीब नजारा है और मन ही मन में मौज की लहरें दिल के सागर में गोता लगा रही हैं. इन सब को देख कर अपना बचपन किसी फिल्म की तरह सामने चलने लगता है.

यह सब देखतेदेखते मैं अपने क्वार्टर पर पहुंचा. भागदौड़ के साथ जल्दबाजी में एक बैग में कपड़े, चार्जर, लैपटौप वगैरह रख स्टेशन के लिए आटोरिकशा पकड़ने भागा.

आटोरिकशा वाला मिला. मैं ने कहा, "चल भाई, झटपट स्टेशन पहुंचा दे."

आटोरिकशा वाला अपनी चिरपरिचित रफ्तार में आटोरिकशा ले कर चलने लगा और हमेशा की तरह मुंबई की सब से बड़ी मुसीबत ट्रैफिक जाम सुरसा की तरह रास्ते में मुंह फैलाए खड़ी थी.

आज ट्रैफिक जाम बिलकुल वैसे लग रहा है, जैसे किसी प्रेमिका को सावन की ठंडी बूंदें भी तपती ज्वाला की तरह लगती हैं. हौलेहौले बढ़ता आटोरिकशा... मानो लग रहा है कि हर सैकंड में 24 घंटे का समय बिता दें.

ट्रैफिक खुला और आटोरिकशा सरपट भागा. अपनी मंजिल को पा कर ही आटोरिकशा रुका. मैं ने पैसे पहले ही निकाल कर रखे थे रोज के अंदोज से. मैं ने झट से उसे पैसे थमाए और अंदर की तरफ अपने कदम बढ़ा दिए, तभी पीछे से आटोरिकशा वाले की आवाज आई, "भाई, बाकी पैसे ले लो."

मैं ने हाथ उठाते हुए कहा, "भैया, दीवाली का शगुन समझ कर रख लो."

वह मुसकराया और वापस मुड़ गया.

मैं स्टेशन के अंदर दाखिल हुआ और गाड़ी का पता किया, जो पूरे एक घंटे की देरी से थी. चूंकि मेरी एयरकंडीशंड कंपार्टमैंट में सीट थी, तो कोई समस्या होने से रही.

स्टेशन पर ही बगल की दुकान से मैं ने एक पत्रिका ली और समय बिताने के लिए वेटिंगरूम में आराम से बैठ गया.

मैं ने पत्रिका खोली और नएनए मुद्दों पर लिखे लंबेचौड़े लेख पढ़ने लगा.

खाली बैठने पर अकसर लोग यही करते हैं. वहां मुश्किल से 8 या 10 लोग होंगे और सब अपने फोन में बिजी दिख रहे थे. आजकल डिजिटलीकरण के दौर में उम्मीद भी यही की जा सकती है.

मैं डिजिटल मीडिया का इस्तेमाल कम ही करता हूं. मैं किताबों का बड़ा शौकीन हूं. बचपन से मुझे पढ़ना बहुत पसंद है और समय मिलते ही मैं किसी न किसी पत्रिका या किताब में खो जाता हूं और उसे समझने की कोशिश करता हूं.

मैं काफी देर से ही पत्रिका पढ़ रहा था, तभी मेरी नजर अचानक सामने वाले कौर्नर पर बैठी एक लड़की पर पड़ी.

मैं उसे देखता रह गया. वह बेहद खूबसूरत थी, जिस की उम्र तकरीबन 25 साल रही होगी. गोरा बदन, हिरन जैसी आंखें, होंठ सुर्ख गुलाबी मूंगे जैसे चमक रहे थे. वह अपने फोन में बिजी थी. शायद वह कुछ देख रही थी या सुन रही हो, हैडफोन जो लगाया था उस ने.

उस लड़की ने गुलाबी टौप और नीली जींस पहनी हुई थी, जो उस के बदन की कसावट में खुद को कसे जा रहे थे.

मैं पत्रिका से छिपछिप कर उसे देखता रहा, तभी अचानक रेलवे की सूचना ने मेरी तंद्रा तोड़ी. मेरी ट्रेन प्लेटफार्म पर आ गई थी और मैं अपनी सीट पर जा कर बैठ गया.

अभी ट्रेन चलने में 15 मिनट बाकी थे. मैं ने उतर कर पानी की बोतल खरीदी और चढ़ने लगा. बोगी में तभी वह लड़की मेरी तरफ आती दिखी. मैं डब्बे में लगे हैंडल को पकड़े उसे निहारने लगा.

वह मेरे एकदम करीब आ कर बोली, "हैलो, रास्ता देंगे आप?"

मैं अचानक खयालों की दुनिया से बाहर आया और उसे रास्ता दिया. वह मेरे ही कंपार्टमैंट में चढ़ गई और मेरे ही सीट के ठीक सामने वाली सीट पर बैठ गई. सच बताऊं, मैं तो मन ही मन बहुत खुश हुआ.

अब हमारे साथ सिर्फ रात और एक लंबा सा सफर था.

मैं भी अपनी सीट पर आ कर बैठ गया. थोड़ी देर बाद ट्रेन चल दी और मैं ने हिम्मत कर के उस का नाम पूछा.

उस ने मुसकराते हुए कहा, "प्रिया."

प्रिया की मीठी आवाज ने मन को अजब ही सुकून दिया, फिर हमारी औपचारिक बात शुरू हो गई जैसे काम, छुट्टी, मुंबई की वगैरह.

बातों ही बातों में पता चला कि वह यहां फैशन मौडलिंग की पढ़ाई और मौडलिंग दोनों करती है.

मैं ने उस से बोल दिया, "आप बेहद खूबसूरत हैं. मन करता है कि आप को देखता रहूं."

यह सुन कर वह मुसकरा दी. हमारी बातें आगे बढ़ीं और मुझे ऐसा लग रहा था, वह भी मेरे करीब आ रही है. तभी खाने का और्डर लेने वाला आया और हम ने और्डर दिया.

अब मैं फिर उस से बातें करने लगा और धीरेधीरे हम मुंबई को पीछे छोड़ रहे थे, लेकिन एकदूसरे के करीब आ रहे थे. मैं घरपरिवार, अपनी सीमाओं को दिमाग में न याद आने वाले हिस्से में छोड़ कर पुराने समय में जब मैं कुंआरा था, वहां प्रवेश कर चुका था. उस से पता चला कि वह मेरे शहर में उस की दीदी के यहां जा रही है. वह उन से 5 साल बाद मिल रही है, जो उन की चूआ की बेटी हैं.

धीरेधीरे हम दोनों में अच्छी बौंडिंग बन गई. हम ने खुल कर बातें करनी शुरू कर दीं और कई बार मैं ने उसे नौनवेज चुटकुले सुनाए, जिस पर उस ने कंटीली मुसकान दी.

मैं ने मौडलों के बारे में सुना था कि वे बड़ी तेज होती हैं और आज देख भी लिया.

प्रिया ने यह भी बताया कि उस का एक बौयफ्रैंड था, जिस से उस का अब ब्रेकअप हो गया है, क्योंकि वह किसी और को भी डेट कर रहा था.

प्यार बढ़ेगा,
दूध बहेगा!
कपिला
पशु आहार
एवं
कश्यप
सुप्रीम पैलेट SUPREME PELLET
75% दूध उत्पादन में वृद्धि
अच्छा स्वास्थ्य | लंबी आयु | ज्यादा दूध
एक मात्र निर्माता : कामधेनु कैटिल फीड्स प्रा० लि० 84/54, जरीब चौकी, जी.टी. रोड, कानपुर • Ph.: 0512-2520177, 2520178, 9235425981, E-mail :info@kapilacattlefeed.com

मैं ने उस से झूठ बोल दिया कि मैं तो सिंगल हूं.

उस की खूबसूरती में इतना डूबा था कि अपना वजूद ही भूल गया था कि मेरा तो सबकुछ वह है, जो घर पर मेरा इंतजार कर रही है.

तभी अचानक बोगी के बाहर आवाज हुई. खाने वाला आया था. हम दोनों ने खाना खाया. उस के बाद हम ने सोने की तैयारी की और अपनीअपनी सीट पर लेटेलेटे हम दोनों बातों में फिर मशगूल हो गए.

बातोंबातों में कभीकभी मैं अपने हाथ उस की पीठ पर छू देता था, लेकिन उस ने कभी बुरा नहीं माना. वह भी मेरे ऐसा ही कर रही थी.

धड़धड़ की आवाज से रेल अपनी तेज रफ्तार में पटरियों को पीछे धकेल रही थी और बाहर कितने गांव, गली, शहर पीछे छूटते जा रहे थे.

हम दोनों बाहरी दुनिया से बिलकुल अनजान थे. बस अपनीअपनी दुनिया में बिजी थे. रात के 1 बज गए थे, दिनभर के काम और भागदौड़ के बाद भी आंखों में नींद का अतापता नहीं था. उसे भी नींद नहीं आ रही थी. लेकिन हम दोनों लेकिन करीब जरूर आ रहे थे.

तकरीबन एक घंटा और बीता होगा यानी आधी रात कट चुकी थी. रात पूरे शबाब पर थी और रेल की चाल भी.

प्रिया अब अपनी सीट से उठ कर मेरी सीट पर थी. हम दोनों एकदूसरे के मन में उतर रहे थे. जैसेजैसे रात बढ़ी, हमारी दूरियों में कमी आई.

प्रिया की सांसों की बढ़ती तेजी मेरी सांसों को पूरी तरह से छू रही थी. उस के जिस्म और जवानी का जोश मुझ पर अपनी पूरी ताकत से वार कर रहा था, जैसे समुद्र के किनारे बैठे किसी शख्स को उस की तेज लहरें नहला कर चली जाती हैं. लेकिन वह भीग कर मजा पाता है, ठीक वैसे ही मैं भी हर पल मस्ती में डूब रहा था. मेरे मन में यही था कि यह वक्त यहीं ठहर जाए.

उस के साथ हो रहे प्रेम हवन में दोनों के जिस्म अपनीअपनी आहुति पूरे मन से दे रहे थे. न वक्त की परवाह और न ही जगह, न ही सफर. बस अजीब सी मंजिल की तलाश में दो मुसाफिर चल रहे थे.

हम दोनों एकदूसरे में उतर गए थे और अब दोनों के चेहरे पर अलग मुसकान थी. उस ने प्यार से मेरे गालों को चूमा और फिर मेरे सीने पर सिर रख कर किसी बच्चे की तरह सोने लगी.

मैं भी उस के सिर पर हाथ फेरने लगा और दोनों नींद की गोद में आ गए.

सुबह हुई, हमारा स्टेशन आया और हम दोनों आखिरी बार गले मिले और अपनीअपनी मंजिल को निकल लिए.

हम इतने करीब आए, लेकिन मैं ने न उस का फोन नंबर लिया और न ही उस का कोई सोशल मीडिया का पता. शायद ये मेरी बेवकूफी भी थी.

मैं स्टेशन से सीधे बाजार गया और मिठाई व कुछ दूसरा सामान लिया, फिर तकरीबन 2 घंटे की देरी से घर पहुंचा. अमूमन मुझे स्टेशन से घर आने में आधे घंटे का समय लगता है.

घर पहुंचने पर मातापिता के पैर छुए और फिर पत्नी भी मिली. मैं अपने कमरे में आया, तभी मेरी पत्नी ने थोड़ी देर रुक कर कहा, "सुनोजी, मुझे आप को किसी से मिलाना है. मेरी बहन, जो शादी में न आ पाई थी, मैं ने उसे त्योहार पर घर बुलाया है."

"जी..." मैं ने भी सहमति दी.

तभी उस ने आवाज लगाई. आवाज सुन कर एक लड़की पीले सूट में कमरे में आई. उसे देखते ही मैं चौंक गया, क्योंकि वह कोई और नहीं बल्कि वही थी, जो रातभर मेरी सहयात्री थी.

उस ने मुझे देखा, मुसकराई और नमस्ते बोल कर चली गई.

उसे देख कर मेरी तो जैसे जबान ही बंद थी. तकरीबन एक घंटे बाद मैं उस से अकेले में मिला, तब मैं ने उस से कहा, "सौरी, हम से शायद भूल हो गई."

प्रिया ने कहा, "भूल हम दोनों से हुई जीजाजी. अब भूल को भी भूल कर आप त्योहार का मजा लीजिए. एक हसीं सपना समझ कर उसे भूल जाइए और मैं भी. दीदी को कुछ पता न चले, वरना वे बहुत दुखी होंगी."

इतना कह कर प्रिया अपनी दीदी के पास चली गई.

मैं अकेले बैठ कर उसी हसीं भूल के बारे में सोचता रहा. ●

गंदगी भरे माहौल में सजेसंवरे रहें

सुनील

एक फिल्म आई थी 'ट्रैफिक सिगनल'. उस में एक छोटे बच्चे का किरदार था, जो चौराहे पर भीख मांगता है. वह बच्चा रंग से काला होता है और उस के मन में यह बात गांठ बांध चुकी होती है कि गोरा करने की क्रीम से वह भी निखर जाएगा.

ऐसा होता तो नहीं है, पर यह बात जरूर साबित हो जाती है कि गंदगी भरे माहौल में रहने का यह मतलब नहीं है कि आप हमेशा बिना नहाए, मैलेकुचैले कपड़ों में रहो.

जब से शहर बने हैं, तब से उन के आसपास गंदी बस्तियों का जमावड़ा लगना शुरू हुआ है. पहले लोग गांवकसबों में ही रहते थे. गांवदेहात में कच्चे घर, खेतखलिहान, तालाबकुएं, ज्यादा से ज्यादा अनाज मंडी तक किसान और उस के परिवार की पहुंच थी, लिहाजा ऐसा मान लिया जाता था कि मोटा खाओ और सादा जियो.

इस सादा जिंदगी में नहानेधोने, कपड़े पहनने पर इतना जोर नहीं रहता था. ज्यादातर देहाती आबादी को कहें तो उठनेबैठने का भी शऊर नहीं था, तभी तो अगर कोई किसान नए कपड़े पहन कर, नहाधो कर घर से बाहर निकलता था तो दूसरे लोग मजाक में पूछ लेते थे कि जनेत (बरात) में जा रहा है क्या?

हां, तब भी एक तबका ऐसा था, जो बनसंवर कर रहता था, फिर चाहे उस समाज की औरत हो या फिर मर्द. वह तबका था बनियों का. 'लाला' समाज हमेशा से बनावसिंगार और खानपान के प्रति सजग रहा है, तभी तो उन्हें सेठ और सेठानी का तमगा दिया गया.

बहुत से पढ़ेलिखे किसान भी खुद को अलग दिखाने के लिए बनठन कर रहते थे. सारा दिन खेत में मिट्टी में मिट्टी हुए, फिर घर वापस आए, नहाएधोए और पहन कर धोतीकुरता अपनी बैठक में मजमा लगा लिया.

मुझे अपने बचपन की याद है कि ऐसे लोगों का पूरा गांव में रुतबा होता था. उन की बात सुनी जाती थी और उस पर अमल भी होता था.

लेकिन आज भी बहुत से लोग अपनी पूरी जिंदगी इस बात को कोसते रह जाते हैं कि हाय, इस गरीबी, गुरबत, फटेहाली में कैसे बनसंवर कर रहें? रहते तो कच्ची बस्ती में हैं या गांव की बदहाली में, तो फिर कैसे टिपटौप रहें? ये सब तो पैसे वालों के चोंचले हैं.

पर, ऐसा बिलकुल नहीं है. इस बहानेबाजी की जड़ में किसी की गरीबी नहीं, बल्कि उस की काहिली होती है वरना खुद को साफसुथरा रखना कोई रौकेट साइंस नहीं है.

अगर शहरों में गंदी बस्तियों की बात की जाए, तो वहां तो गांवदेहात से भी बदतर हालात होते हैं. अगर साधारण शब्दों मे परिभाषित किया जाए, तो वे सब रिहायशी इलाके गंदी बस्तियां कहलाते हैं, जहां सेहतमंद जिंदगी की रिहायशी सुविधाएं मुहैया नहीं होतीं.

पर वहां रहने वाले ऐसे उलट हालात में क्या साफसुथरे नहीं रह सकते हैं? बिलकुल रह सकते हैं और रहते भी हैं. यह बस उन की सोच पर निर्भर करता है. अमीर घरों में काम करने वाली औरतें, जिन्हें 'कामवाली' ही कहा जाता है, वे खुद जितनी साफसुथरी रहती हैं, उन्हें उतना ही ज्यादा काम मिलने की उम्मीद रहती है.

यही कामवालियां अपने घर की धुरी होती हैं. जो खुद सजासंवरा होगा, अपने परिवार को भी ऐसा ही देखना चाहेगा.

सुबह नहानेधोने में ज्यादा पैसा खर्च नहीं होता है और जरूरी नहीं है कि आप के पास नए या ज्यादा जोड़ी कपड़े हों, बल्कि अच्छे से धुले हुए कपड़े भी सलीके से पहने जाएं तो भी शख्सीयत एकदम बदल जाती है और इन सब पर रोजाना खर्चा नहीं करना पड़ता है, बस अपनी चीजों और खुद को ढंग से रखना होता है.

सुबह टूथपेस्ट, टूथब्रश (अगर ये नहीं हैं तो नीम या बबूल की दातौन), साबुन, तेल जैसी सामग्री नहानेधोने के काम आती है, जो ज्यादा महंगी नहीं होती. बाकी कपड़ों पर अपनी हैसियत से पैसा लगाया जाता है. महिलाओं के लिए लालीबिंदी भी ज्यादा पैसा खर्च नहीं कराती है. मर्दों को तो इतना भी नहीं करना पड़ता है.

फरीदाबाद की सैक्टर 31 की मार्केट में जयलक्ष्मी किराना स्टोर के नितिन ने बताया, "साफसुथरा रहना एक आदत होती है और जो इस से बचता है, वह चाहे अमीर हो या गरीब, कहीं भी कामयाब नहीं हो सकता है. गंदे आदमी को कोई पसंद नहीं करता है.

"इस के लिए ज्यादा खर्च भी नहीं होता है. किसी कंपनी का टूथब्रश तकरीबन 20 रुपए (लोकल तो और भी सस्ता हो सकता है) तक का आ जाता है. टूथपेस्ट की कीमत भी 10 रुपए से शुरू हो जाती है. नहाने और कपड़े धोने का साबुन भी 10 रुपए से शुरू हो जाता है. ये चीजें रोजरोज नहीं खरीदनी पड़ती हैं."

याद रखिए कि जब किसी परिवार के बड़े अपनी साफसफाई पर ध्यान देते हैं, तो बच्चे भी उन की देखादेखी अच्छी आदतें डाल ही लेते हैं, बस खुद पर आलस न हावी होने दें या गंदी बस्ती या गांवदेहात में रहने का रोना न रोएं. ●

मर्द की मार सहे या घर छोड़ दे औरत?

धीरज कुमार

माला का पति महेश रोज शराब पी कर घर आता है. वह बातबात पर अपनी पत्नी से झगड़ा करता है, लेकिन जब शराब का नशा उतरता है, तो माला से खूब प्यारभरी बातें करता है.

माला भी उस की प्यार भरी बातों में फिसल जाती है. वह अपने पति की मार और दुत्कार को भूल जाती है.

जब माला महेश को अपनी कसम दे कर शराब छोड़ने की बात करती है, तो वह जल्दी ही मान जाता है. लेकिन शाम होतेहोते वह फिर पुरानी बातों पर आ जाता है. वह अपनी पत्नी की कसम को भूल जाता है और फिर से शराब पी कर आ जाता है. फिर वह रोज की तरह अपनी पत्नी और बच्चों को गालियां देता है और मारपीट करता है.

महेश और माला के 2 बच्चे हैं. माला घरेलू औरत है और खुद बाहर काम नहीं कर पाती है. उस के मायके में कोई उसे सहारा देने वाला भी नहीं है. वह चाह कर भी अपने पति महेश को छोड़ नहीं पा रही है. वह किसी तरह अपने बच्चों की ठीक से परवरिश करना चाहती है. वह चाहती है कि उस के बच्चे पढ़लिख कर अच्छे इनसान बनें.

लेकिन माला के पति के शराब पीने की लत के चलते घर में हमेशा पैसे की तंगी बनी रहती है. उस का पति मोटरगैराज में काम करता है. वहां वह अच्छा कमा लेता है, पर शाम होतेहोते आधे से ज्यादा पैसे की शराब पी जाता है. उसे बाकी चीजों पर तो काबू है, पर वह खुद को शराब पीने से नहीं रोक पाता है.

आज भी देशभर में औरतों के साथ घरेलू हिंसा की घटनाएं हो रही हैं. भले ही हमारे देश में पढ़ाईलिखाई का लैवल बढ़ा हो, लेकिन इन घटनाओं में कमी नहीं आई है. आज भी औरतों को मर्दों से कमतर आंका जाता है. उन्हें कमजोर समझा जाता है. वे भोगने की चीज समझी जाती हैं, इसलिए उन के साथ आज भी घरेलू हिंसा बरकरार है.

जब कोई मर्द अपनी औरत के साथ झगड़ा करता है, तब वह उस का मुंह बंद करने के लिए हाथ उठाने से भी गुरेज नहीं करता है, जबकि औरतें ऐसा नहीं कर पाती हैं. आज भी औरतें पति को काफी इज्जत देती हैं. पति को बड़ा समझती हैं और खुद को उन के पैर की जूती मानती हैं, इसी सोच का पति नाजायज फायदा उठाते हैं.

कई बार औरतें घरेलू हिंसा सहती रहती हैं, पर कानून की मदद नहीं ले पाती हैं, क्योंकि उन का मानना है कि ऐसा करने पर उन के घरपरिवार की इज्जत नीलाम हो जाती है. वहीं दूसरी तरफ वे खुद को कोर्टकचहरी के चक्कर से भी बचाना चाहती हैं, क्योंकि घरेलू हिंसा की शिकार औरत के पास इतनी ताकत नहीं बचती है कि वह अलग से कोर्टकचहरी और थाने के चक्कर लगा सके.

आज भी हिंसा की शिकार औरतें घुटघुट कर जीती हैं. वे चाह कर भी अपने पति से अलग नहीं हो पाती हैं. पति उन पर कितना भी जुल्म करता रहे, वे उस के साथ जिंदगी गुजारने के लिए मजबूर होती हैं.

इस की बड़ी वजह यह है कि अकेली औरत को कई परेशानियां झेलनी पड़ती हैं. मसलन, किराए का मकान नहीं मिलना, लोगों के नजरिए में बदलाव. अकेली औरत को देख कर लोग तरहतरह की कहानियां गढ़ने लगते हैं. छोटे शहरों, गांवकसबों में तो और भी कई तरह की परेशानियां हैं.

दरअसल, इस के पीछे मायके से मिली सीख का भी गहरा असर होता है. शादी से पहले हर लड़की को यह सीख दी जाती है कि शादी के बाद पति ही सबकुछ होता है. उस की जायज और नाजायज बातों को हर हाल में मानना चाहिए, ससुराल ही सबकुछ होता है. वहीं तुम्हें मरना है, वहीं तुम्हें जीना है. शादी के बाद हर लड़की की ससुराल से ही अर्थी निकलती है यानी उस का अपने मातापिता के घर से नाता टूट जाता है.

इन बातों के चलते लड़की खुद को कमजोर समझने लगती है. वह बुरे से बुरे हालात में भी पति के साथ रहने को मजबूर हो जाती है, इसीलिए कुछ मर्द औरतों के साथ कई तरह के जुल्म करते रहते हैं. ऐसी औरतें ही हिंसा की ज्यादा शिकार होती हैं.

रंजना देखने में खूबसूरत नहीं थी. वह सांवली और छोटे कद की थी. उस के मातापिता ने अपनी हैसियत के मुताबिक दहेज दे कर खातेपीते परिवार में उस का ब्याह किया था.

पर शादी के बाद से ही रंजना का पति उसे नापसंद करने लगा था, क्योंकि यह शादी अरेंज मैरिज थी, इसलिए वह रंजना को पहले नहीं देख पाया था.

इस का नतीजा यह था कि पति बातबात पर रंजना के साथ झगड़ा और मारपीट करता था. फिर भी रंजना अपने इस रिश्ते को ढोने की कोशिश कर रही थी. उसे उम्मीद थी कि अपने रंगरूप से तो वह पति को आकर्षित नहीं कर पाई, लेकिन अपने अच्छे गुणों से एक न एक दिन उन्हें आकर्षित जरूर कर पाएगी, इसीलिए वह अपने पति और सासससुर की दिनरात सेवा करती रहती थी, फिर भी उन लोगों में कोई बदलाव नहीं हुआ.

रंजना 12वीं जमात तक पढ़ी थी. जब उस के राज्य में प्राथमिक शिक्षक की बहाली निकली, तो उस ने भी अर्जी दे दी. शिक्षक बहाली में 35 फीसदी महिला आरक्षण होने के चलते रंजना को अपने गांव के ही एक स्कूल में नौकरी मिल गई. इस तरह वह आत्मनिर्भर बन गई.

अब रंजना अपना फैसला लेने के लिए आजाद थी. वह सालों से अपने पति, सास, ननद के उलाहने सहती आ रही थी. अब वह सोच रही थी कि अपने पति से अलग हो कर बाकी की जिंदगी अपने बच्चों के साथ गुजारेगी.

लेकिन उस की ससुराल वालों ने परिवार का माली नुकसान देख कर उसे साथ रखने को मना लिया. अब उस के सासससुर और पति कमाऊ पत्नी होने के चलते सबकुछ सहने को तैयार हैं. कल तक रंजना अपने पति और सासससुर के उलाहने झेलती थी, लेकिन अब वह उस परिवार में शान से रहती है.

रंजना के माली हालात बदलते ही पति के परिवार का रवैया बदल गया. कल तक रंजना अपने परिवार से दूर रहना चाहती थी, लेकिन अब वह परिवार के लिए जरूरत बन गई थी, इसलिए उस के परिवार के लोग अब उस के नखरे सहने के लिए तैयार थे.

लिहाजा, जरूरी है कि जो अपनेअपने घरपरिवार, सासससुर, पति द्वारा सताई जा रही हों, तो सब से पहले उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए सोचना चाहिए. कोई जरूरी नहीं है कि सरकारी नौकरी ही मिले. सब से पहले अपने माली हालात ठीक करने के लिए सोचना चाहिए. अपने पैरों पर खड़ी औरत अपना रास्ता खुद बना सकती है. जरूरत पड़ने पर अपने घरपरिवार, ससुराल और पति से अलग भी हो सकती है. ●

दीदी मुझे माफ कर दो

डा. रंजना जायसवाल

सुबह से यह चौथा फोन था. फोन उठाने का बिलकुल मन नहीं था. पर मां समझने को तैयार ही नहीं थीं. फोन की घंटियां उस के दिमाग पर हथौड़े की तरह पड़ रही थीं.

आखिरकार, नेहा ने फोन उठा ही लिया, "हैलो, हां मां, बोलो?"

"बोलना क्या है, घर में सभी तुम्हारे जवाब का इंतजार कर रहे हैं. तुम किसी की बात का जवाब क्यों नहीं देती?"

"मां, इतना आसान नहीं है यह सब. मुझे सोचने का मौका तो दो," नेहा ने बुझी आवाज में कहा.

"सोचना क्या है इस में? तुम्हारी बहन की आखिरी इच्छा थी. क्या बिलकुल भी दया नहीं आती तुम्हें. उन बच्चों के मासूम चेहरों को तो देखो."

"मां, मैं समझती हूं, पर..."

"पर क्या...? वह सिर्फ तुम्हारी बहन नहीं थी. मां की तरह पाला था उस ने तुम्हें. आज जब उस के बच्चों को मां की जरूरत है, तो तुम्हें सोचने का समय चाहिए?"

"मां, इतनी जल्दबाजी में इस तरह के फैसले नहीं लिए जाते."

"हम ने भी दुनिया देखी है. ठीक है, अगर तुम्हें उन बच्चों की छीछालेदर होना मंजूर है, तो फिर क्या कहा जा सकता है."

"यह क्या बात हुई. तुम इस तरह की बातें क्यों कर रही हो?" नेहा बोली.

मां का गला भर आया, "तुम अभी मां नहीं बनी हो न. जब मां बनोगी, तब औलाद का दर्द समझोगी. फूल से बच्चे मां के बिना कलप रहे हैं. और तुम हो कि सब दरवाजे बंद कर के बैठी हो."

नेहा का मन खराब हो चुका था. क्या इतना आसान था यह सब. 4 भाईबहनों में सब से छोटी थी वह. सब से लाड़ली. पर जिंदगी उसे इतने कड़वे और मुश्किल मोड़ पर ला कर खड़ा कर देगी, उस ने सोचा न था.

दीदी की शादी के वक्त महज 17 साल की नाजुक उम्र थी उस की. पहली बार साड़ी पहनी थी. कितना जोश था. जीजाजी के जूते चुराएगी. 10,000 से एक रुपए कम न लेगी. उन्हें खूब तंग करेगी.

जीजाजी उस की हर शरारत पर मुसकरा कर रह जाते. वे सिर्फ उस की बहन के पति ही नहीं, नेहा की हर बात के हमराज, समझदार और सुलझे हुए इनसान थे. नेहा बहुत सारी ऐसी बातें, जो दीदी को नहीं बताती थी, जीजाजी से डिस्कस करती थी.

जीजाजी के बढ़ावा देने पर ही नेहा ने सिविल सर्विसेज की तैयारी करनी शुरू की थी, नहीं तो मां के आगे तो वह भी दीदी की तरह मजबूर हो जाती और आज वह भी दीदी की तरह किसी की घरगृहस्थी देख रही होती.

दीदी पढ़ने में बहुत अच्छी थीं, पर बाबा की आखिरी इच्छा का मान रखने के लिए दीदी बलि का बकरा बन कर रह गईं और अचारमुरब्बे व नएनए पकवानों के अलावा आगे कुछ भी न सोच सकीं.

याद है उसे आज भी वह दिन, जब दीदी को कैंसर की रिपोर्ट आई थी. कैंसर थर्ड स्टेज पर था. घर में कुहराम मच गया था. मां का रोरो कर बुरा हाल था और दीदी दीवार का कोना पकड़े चुप बनी हुई थी.

नेहा को समझ में नहीं आ रहा था किसकिस को संभाले और क्या समझाए. समझते सभी थे, पर एकदूसरे को झूठी दिलासा देते रहे.

प्रवीण जीजाजी का चेहरा अचानक से बूढ़ा लगने लगा था. अपनी जीवनसंगिनी की यह हालत उन से बरदाश्त नहीं हो रही थी. कितने सुखी थे वे.

जीजाजी ने दीदी को बचाने के लिए हर मुमकिन कोशिश की. मुंबई, चेन्नई कहांकहां नहीं दौड़े. किसकिस के आगे हाथ नहीं जोड़े. पर सब बेकार गया. जीजाजी की आलीशान कोठी, रुपयापैसा सब धरा रह गया और दीदी सब को रोतारिलखता छोड़ कर चली गईं. इन दिनों में नेहा ने क्याक्या देखा और महसूस किया, वही जानती थी.

घर मेहमानों और रिश्तेदारों से भरा हुआ था. नन्ही परी मां के लिए बिलखतेबिलखते नेहा की गोदी में ही सो गई थी. दीदी की चचेरा सास कनखियों से नेहा को बारबार घूर रही थीं.

"बेटा, तुम कौन हो? बहुत देखादेखा सा चेहरा लग रहा है."

नेहा ने परी की तरफ इशारा कर के कहा, "मैं इस की मौसी हूं."

चाचीजी के चेहरे पर एक रहस्यमयी मुसकान आ गई. उन्होंने सोती हुई परी के सिर पर हाथ फेरते हुए बड़े अजीब ढंग से कहा, "हां भई, परी के लिए तुम मांसी हो. अब तो तुम ही इस की मां..."

नेहा गुस्से से तिलमिला गई. चाची के शब्द गले मे अटक कर रह गए.

नेहा परी को ले कर कमरे में चली गई. यह पहली बार नहीं था. इन 13 दिनों में हर आनेजाने वालों की निगाहों में उस ने यही सवाल तैरते देखा था. कितना रोई थी वह उस दिन.

धीरेधीरे सारे मेहमान चले गए. नेहा सामान पैक कर रही थी, तभी परी और गोलू ने आ कर चौंका दिया.

"मौसी, आप जा रही हैं?"

नेहा दुविधा में फंसी थी. उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था. मरने वाला तो मर गया था, लेकिन उस की आखिरी इच्छा नेहा को जिंदा लाश बनाने पर तुली हुई थी. फिर एक दिन...

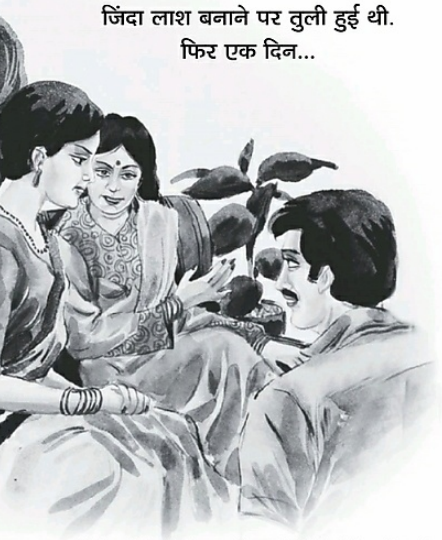

"हां बेटा, मेरी छुट्टियां खत्म हो गई हैं. ऑफिस भी जाना है न. तुम उदास क्यों हो. हम रोज वीडियो काल से बात करेंगे. अपना होमवर्क रोज करना..."

बच्चे चुपचाप सुनते रहे. दीदी के बच्चे बहुत समझदार और आत्मनिर्भर थे. पर फिर भी बच्चे ही थे. बच्चे नेहा को छोड़ कर चले गए. तभी मां कमरे में आ गईं, "नेहा, सामान पैक हो गया?"

"हां मां, ऑफिस से बारबार फोन आ रहा है. आप लोग कब निकल रहे हो?"

"तुम्हारे पापा और भैया कल सुबह निकलेंगे. मैं अभी कुछ दिन यहीं रहूंगी."

नेहा सिर झुकाए मां की बात सुनती रही.

"नेहा, तुझ से एक बात कहनी थी."

"हां, बोलो मां, सुन रही हूं."

मां बोलीं, "नेहा, तुम से कुछ भी नहीं छिपा. तुम्हारी दीदी के जाने के बाद हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ गई है. तुम्हारी दीदी ने मरने से पहले मुझ से एक वादा लिया था. वह चाहती थी कि उस के मरने के बाद तुम उस के बच्चों की जिम्मेदारी संभालो. तुम प्रवीणजी से शादी कर लो."

नेहा छटपटा कर रह गई, "मां, तुम ऐसा सोच भी कैसे सकती हो? जीजाजी के साथ मेरी शादी..."

"नेहा, समझने की कोशिश करो. आखिर तुम्हारी भी शादी करनी ही है. देखाभाला परिवार है. बच्चों को मां मिल जाएगी. वैसे भी एक लड़की को क्या चाहिए. आलीशान घर, नौकरचाकर, रुपयापैसा. तुम्हारे पापा की भी यही इच्छा है."

नेहा हैरानी से मां को देखती रह गई, "तुम ने जीजाजी से भी एक बार पूछा है?"

"पूछना क्या है उन के मातापिता तो हैं नहीं. चाचाचाची से बात हो गई है. उन्हें भी यह रिश्ता मंजूर है."

"रिश्ता...?" नेहा को सारा मामला समझ में आ गया.

"मां, मैं तुम से इस बात की उम्मीद नहीं कर रही थी."

मां का चेहरा गंभीर हो गया, "हो सकता है, आज तुम्हें मेरी बातें अच्छी न लगें, पर तुम्हारी दीदी के जाने के बाद प्रवीणजी और उन के बच्चों की जिम्मेदारी भी मुझ पर है. तुम सोचविचार कर जल्द मुझे जवाब दे दो. कहते हैं, मरने वाले की अंतिम इच्छा न पूरी की जाए, तो उसे कभी शांति नहीं मिलती."

आखिरी वाक्य कहते वक्त मां ने नेहा को अजीब सी निगाहों से देखा. पता नहीं, उन निगाहों में ऐसा क्या था. वह उन आंखों में तैर रहे हजारों सवाल के तीर झेल नहीं पाई और मुंह घुमा लिया.

एक हफ्ते में मां ने पचासों बार फोन कर दिया था. हर बार एक ही सवाल और नेहा एक ही जवाब देती, 'मां, मुझे सोचने का वक्त दो.'

नेहा हर बार एक ही बात पर आ कर अटक जाती. सब को दीदी की आखिरी इच्छा की पड़ी है. पर किसी ने एक बार, हां सिर्फ एक बार, उस से पूछा कि उस की इच्छा क्या है?

शनिवार की रात थी. इन दिनों नेहा बहुत बिजी रही. हाथ में कौफी का मग लिए वह छत पर आ गई. कितने दिनों बाद वह छत पर सुकून के चंद पलों की तलाश में आ कर बैठी थी. आसमान में चांद बादलों से लुकाछिपी कर रहा था. वह सोचने लगी कि बादलों और तारों के बीच रह कर भी चांद कितना अकेला है.

वह भी तो आज कितनी अकेली थी. कोई उसे समझने को तैयार नहीं. किसी ने एक बार भी उस के बारे में नहीं सोचा. सब अपनी जिम्मेदारियों से छुटकारा पाना चाहते हैं और वह? वह आखिर क्या चाहती है?

नेहा की आंखों के सामने जीजाजी का थका हुआ चेहरा, परी और गोलू का मासूम चेहरा, तो कभी मां का गंभीर चेहरा उभर कर आ जाता. नेहा ने आंखें मूंद लीं.

आखिर एक लड़की को क्या चाहिए अपनी जिंदगी से. एक खुशहाल परिवार, रुपयापैसा, घर बस. बस, क्या यही चाहिए था उसे. आज अगर वह मां की बात मान कर शादी कर ले तो इस रिश्ते में उसे क्या मिलेगा? दीदी की परछाईं होने का दर्जा? दूसरी पत्नी, दूसरी मां?

नेहा मन ही मन मुसकराने लगी. दूसरी मां नहीं, सौतेली मां. बड़ी बहन ज्यादा सुंदर थी. प्रवीण की निगाहें हर चीज, हर रंग, हर त्योहार, हर खुशबू, हर स्वाद में दीदी को ही ढूंढ़ेंगी. तिनकातिनका जोड़ कर अरमानों से सजाए हुए दीदी के उस घर में एक फूलदान सजाने में भी नेहा के हाथ कांपेंगे.

नेहा अभी भी सोच रही थी कि हर पार्टी, हर उत्सव में लोगों की सवालिया निगाहें उसे तारतार करेंगी, 'देखने में तो ठीक लगती है, फिर ऐसी क्या गरज पड़ी थी, 2 बच्चों के बाप से शादी करने की? अकेली आई है या बच्चे भी...'

घूमने से पहले पचास बार सोचना होगा कि न जाने लोग क्या कहें, 'घरगृहस्थी संभालनी चाहिए. पर यह तो हनीमून के मूड में है. शादी में इतनी धूम और रिश्तेदारों की क्या जरूरत. चुपचाप कोर्ट मैरिज कर लेती. शर्म नहीं आती. इतने बड़ेबड़े बच्चों के सामने इतना तैयार हो कर खड़ी हो जाती है.'

नेहा ने घबरा कर आंखें खोल दीं और आसमान में तारों के बीच दीदी को ढूंढ़ने लगी, 'दीदी, मुझे माफ कर देना. शायद, आज मैं तुम्हें और सब को स्वार्थी लगूं, पर मैं इतनी मजबूत नहीं कि जिंदगीभर लोगों के सवालों का जवाब दे सकूं.

'पर, मैं आज तुम से यह वादा करती हूं कि एक मौसी के तौर पर हमेशा तुम्हारे बच्चों के साथ खड़ी हूं.'

हफ्तों से उमड़तेघुमड़ते सवालों का मानो उसे जवाब मिल गया था. नेहा अपनी मां को फोन करने के लिए छत से नीचे उतर गई. ●

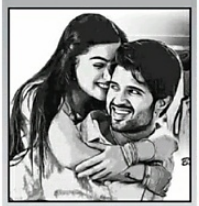

*पिछले अंक में आप ने पढ़ा था : आनंद रंजन एक सामाजिक आदमी थे. वे बेटेबेटियों में कोई फर्क नहीं करते थे. उन की बड़ी बेटी निहारिका कालेज में पढ़ रही थी और वहीं लखनऊ में पेइंग गैस्ट बन कर रहती थी. वहां उस की मुलाकात राजवीर सिंह से हुई, जो नेतागीरी भी करता था. नजदीकियां बढ़ीं तो उन्होंने शादी कर ली. **अब पढ़िए आगे...***

निहारिका को यह सब पसंद नहीं था. राजवीर सिंह के बहुत कहने पर भी वह ऐसा नहीं कर पाती थी. कई बार तो निहारिका को उलटी भी हो गई थी.

यह राजवीर सिंह का एक नया और अलग ही रूप था, जिसे निहारिका पहली बार देख रही थी.

अपनी इस समस्या के लिए निहारिका ने इंटरनैट का सहारा लिया और पाया कि कुछ मर्दों में पोर्न फिल्म देखने और वैसा ही करने की कुछ ज्यादा ललक होती है और यह बिलकुल ही सहज है.

निहारिका ने सोचा कि अभी नईनई शादी हुई है, इसलिए राजवीर सिंह ज्यादा उतावला है. थोड़ा समय बीतेगा तो वे मेरी भावनाओं को भी समझेंगे, पर बेचारी निहारिका को क्या पता था कि ऐसा कभी नहीं होने वाला था.

शादी के 5 महीने बीत चुके थे. निहारिका की छोटी बहन रिया अपने पापा आनंद रंजन के साथ निहारिका से मिलने आई थी.

आनंद रंजन तो अपनी बेटी से मिल कर चले गए, पर रिया बहन के प्रेमवश रुक गई थी.

राजवीर सिंह ने भी आनंद रंजन को बताया कि वे सब आगरा जाने का प्लान बना रहे हैं और इस में रिया भी साथ रहेगी, तो निहारिका को भी अच्छा लगेगा.

इस पर आनंद रंजन को कोई एतराज नहीं हुआ.

रिया के आने के बाद तो राजवीर सिंह के चेहरे पर चमक और भी बढ़ गई थी. बढ़ती भी क्यों न, दोनों का रिश्ता ही ऐसा था. अब तो उन दोनों में खूब चुहलबाजियां होतीं और अपने जीजाजी को छेड़ने का कोई भी मौका रिया अपने हाथ से नहीं जाने देती थी.

वैसे भी रिया को हमेशा से ही लड़कों के साथ खेलना और उन के साथ उठनाबैठना अच्छा लगता था और अब जीजा के रूप में उसे यह सब करने के लिए एक अच्छा साथी मिल गया था.

एक रात की बात है, जब खाने के बाद रिया अपने कमरे में सोने के लिए गई तो उसे याद आया कि उस के मोबाइल का पावरबैंक जीजाजी के कमरे में ही रह गया है. अभी ज्यादा देर नहीं हुई थी, इसलिए वह अपना पावरबैंक लेने के लिए उन के कमरे के पास गई और दरवाजे के पास अचानक से ठिठक गई. दरवाजा पूरी तरह से बंद नहीं था और अंदर का सीन देख कर रिया रोमांचित हुए बिना न रह सकी.

जीजाजी निहारिका के होंठों को चूम रहे थे और निहारिका भी उन का साथ दे रही थी. उस के हाथ जीजाजी के सिर के बालों में घूम रहे थे.

किसी जोड़े को इस तरह देखना रिया के लिए पहला मौका था. जवानी की

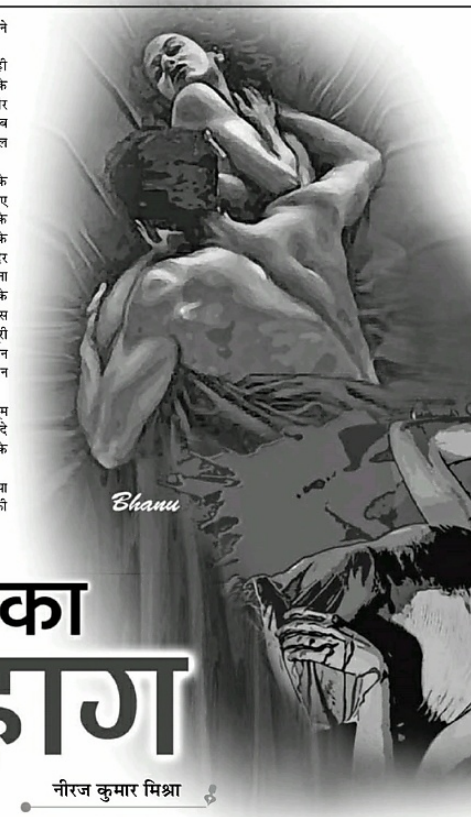

आखिरी भाग

बहन का सुहाग

नीरज कुमार मिश्रा

दहलीज पर कदम रख चुकी रिया भी जोश से भर उठी थी और ऐसा सीन उसे लुभा भी रहा था और मन में देख लिए जाने का डर भी था, इसलिए वह तुरंत ही अपने कमरे में लौट आई.

अपने कमरे में आ कर रिया ने सोने की कोशिश की, पर नींद उस की आंखों से कोसों दूर थी. वह बारबार करवट बदलती थी, पर उस की आंखों में दीदी और जीजाजी का सीन आ रहा था. मन ही मन में वह अपनी शादी के लिए राजवीर सिंह जैसे किसी बांके जवान के ख्वाब देखने लगी.

किसी तरह सुबह हुई, तो सब से पहले जीजाजी रिया के कमरे में आए.

"हैप्पी बर्थडे रिया."

"ओह... अरे जीजाजी... आप को मेरा बर्थडे कैसे पता... जरूर निहारिका दीदी ने बताया होगा."

"अरे भई... तुम्हारे जैसी खूबसूरत लड़की का बर्थडे हम कैसे भूल सकते हैं..." राजवीर सिंह की आंखों में शरारत तैर रही थी.

"ओह... तो आप ने मुझ से पहले ही बाजी मार ली, रिया को हैप्पी बर्थडे विश कर के..."

"हां... हां... क्यों नहीं... तुम से ज्यादा हक है मेरा... आखिर जीजा हूं मैं इस का," हंसते हुए राजवीर सिंह बोला.

कमरे में एकसाथ तीनों के हंसने की आवाज गूंजने लगी.

शाम को एक बड़े होटल में केक काट कर रिया का जन्मदिन मनाया गया. बहुत बड़ी पार्टी दी थी राजवीर सिंह ने और राजनीतिक पार्टी के कई बड़े नेताओं को भी इसी बहाने पार्टी में बुलाया था.

रिया आज बहुत खूबसूरत लग रही थी. कई बार रिया को राजवीर सिंह के साथ खड़ा देख कर लोगों ने उसे ही मिसेज राजवीर समझ लिया था.

और जबजब लोग रिया को 'मिसेज राजवीर' कह कर संबोधित करते, तो एक शर्म की लाली सी उस के चेहरे पर दौड़ जाती.

राजवीर सिंह की शानोशौकत देख कर रिया सोचती कि निहारिका कितनी खुशकिस्मत है, जो उस को इतना बड़ा

और अमीर परिवार मिला. रिया के मन में भी कहीं न कहीं राजवीर सिंह जैसा पति ही पाने की उम्मीद जाग गई थी.

"यह लो... तुम्हारा बर्थडे गिफ्ट," राजवीर सिंह ने एक सुनहरा पैकेट रिया की ओर बढ़ाते हुए कहा.

"ओह... यह क्या... लैपटौप... अरे वाह, जीजू... मुझे लैपटौप की बहुत जरूरत थी. आप सच में बहुत अच्छे हो जीजू..." रिया खुशी से चहक उठी.

राजवीर को पता था कि रिया को अपनी पढ़ाई के लिए एक लैपटौप चाहिए था, इसलिए आज उस के जन्मदिन पर गिफ्ट दे कर उसे खुश कर दिया था राजवीर ने.

रात को अपने कमरे में जा कर लैपटौप औन कर के रिया

गेम्स खेलने लगी. कुछ देर बाद उस की नजर लैपटौप में पड़ी एक 'निहारिका' नाम की फाइल पर पड़ी, तो उत्सुकतावश रिया ने उसे खोला. वह एक ब्लू फिल्म थी, जो अब लैपटौप की स्क्रीन पर प्ले हो रही थी.

पहले तो रिया को कुछ हैरानी हुई कि नए लैपटौप में यह ब्लू फिल्म कैसे आई, पर जवान होने के नाते उस की दिलचस्पी उस फिल्म में बढ़ती गई और फिल्म में आतेजाते सीन को देख कर वह भी जोश में भरने लगी.

यही वह समय था, जब कोई उस के कमरे में आया और अपना हाथ रिया के सीने पर फिराने लगा था.

रिया ने चौंक कर लैपटौप बंद कर दिया और पीछे घूम कर देखा. वह राजवीर था.

"वाह जीजाजी... वह लैपटौप औन करते ही फिल्म..."

"अरे... कोई बात नहीं... तुम... खूबसूरत हो... जवान हो... तुम नहीं देखोगी तो कौन देखेगा... वैसे भी तुम ने उस दिन मुझे और निहारिका को एकदूसरे को किस करते देख लिया था," राजवीर सिंह ने इतना कह कर रिया को अपनी मजबूत बांहों में जकड़ लिया और उस के नरम होंठों को चूसने लगा.

रिया कोई भी विरोध न कर सकी थी. जैसे उसे भी राजवीर की इन बांहों में आने का इंतजार था.

राजवीर सिंह रिया की खूबसूरती का दीवाना हो चुका था, तो रिया भी उस के पैसे और शानोशौकत पर फिदा थी.

दोनों की सांसों की गरमी से कमरा दहक उठा था. राजवीर ने रिया के कपड़े उतारने शुरू कर दिए,

रिया थोड़ा शरमाई, पर सैक्स का नशा उस पर हावी हो रहा था. दोनों एकदूसरे में समा गए,

एक दिन दोनों के बीच का रिश्ता तारतार क्या हुआ, फिर तो दोनों के बीच की सारी दीवारें ही गिर गईं.

राजवीर का काफी समय घर में ही बीतता. जरूरी काम से भी वह बाहर जाने में कतराता था.

घर पर जब भी मौका मिलता, तो वह रिया को छूने का कोई मौका हाथ से नहीं जाने देता. और तो और दोनों सैक्स करने में भी नहीं चूकते थे.

एक दोपहर को जब निहारिका कुछ रसोई के काम में बिजी थी, तभी राजवीर रिया के कमरे में घुस गया और रिया को बांहों में दबोच लिया और दोनों एकदूसरे में डूब कर सैक्स का सुख लूटने लगे.

अभी दोनों अधबीच में ही थे कि कमरे के खुले दरवाजे से निहारिका अंदर आ गई और अंदर का सीन देख कर उस के पैरों के नीचे की जमीन ही खिसक गई.

"राजवीर... यह क्या कर रहे हो... मेरी ही बहन के साथ... अरे, जब मेरा पेट तुम से नहीं भरा तो तुम मेरी ही बहन पर मुंह मारने लगे, माना कि मैं तुम्हारी सारी मांगें नहीं पूरी कर पाती थी, पर तुम्हें कुछ तो अपने ऊपर कंट्रोल रखना चाहिए था.

"और तुम रिया..." रिया की ओर घूमते हुए निहारिका बोली.

"बहन ही बहन की दुश्मन बन गई, तुम से अपनी जवानी नहीं संभाली जा रही थी, तो मुझे बता दिया होता तो मैं मांपापा से कह कर तुम्हारी शादी करा देती, पर यह क्या... तुम्हें मेरा ही आदमी मिला था अपना मुंह काला करने के लिए...

"मैं अभी जा कर यह बात पापा को बताती हूं," कमरे के बाहर जाते हुए निहारिका फुफकार रही थी.

राजवीर ने सोचा कि आज तो निहारिका पापा को यह बात बता ही देगी, अपने ही पापा की नजरों में गिर जाएगा वह...

"मैं कहता हूं, रुक जाओ, निहारिका... रुक जाओ नहीं तो मैं गोली चला दूंगा... रुक जाओ निहारिका..."

'धांय...'

और अगले ही पल निहारिका के मुंह से एक चीख निकली और उस की लाश फर्श पर पड़ी हुई थी.

राजवीर अपनी जेब में हमेशा ही एक रिवौल्वर रखता था, पर किसे पता था कि वह उसे अपनी ही प्रेमिका और नईनवेली दुलहन निहारिका को जान से मारने के लिए ही इस्तेमाल कर देगा.

रिया सकते में थी. अभी वह पूरे कपड़े भी पहन नहीं पाई थी कि गोली की आवाज सुनते ही पापा और मां ऊपर कमरे में आ गए, अंदर का सीन देख कर सभी के चेहरे पर कई सवालिया निशान आजा रहे थे और ऊपर से रिया का इस अवस्था में होना उन की हैरानी को और भी बढ़ाता जा रहा था.

"क्या हुआ... बहू को मार दिया..." मां बुदबुदाईं.

"पर क्यों... राजवीर... ?"

"न... नहीं... मां, मैं ने नहीं मारा है उसे, बल्कि उस ने खुदकुशी की है," राजवीर सिंह ने निहारिका के हाथ के पास पड़े रिवौल्वर की तरफ इशारा करते हुए कहा और इस हत्या को खुदकुशी का रुख देने की कोशिश की.

सब चुप थे...

राजवीर, रिया... और अब उस के मां और पापा को अब तक बिना कहे ही कुछकुछ कहानी उन की समझ में आने लगी थी.

निहारिका के मां और पापा को खबर की गई, पर यह बताने की हिम्मत किसी में नहीं हुई कि निहारिका को किस ने मारा है.

निहारिका के मां और पापा भी रोते हुए आए.

"अच्छीखासी तो थी, जब मैं मिल कर गया था उस से... अचानक से क्या हो गया और भला वह खुदकुशी क्यों करेगी ? बोलो दामादजी... बोलो रिया... तुम तो उस के साथ थीं. वह अपने को क्यों मारेगी..."

आनंद रंजन बदहबास थे. किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था

आनंद रंजन पुलिस को बुलाना चाहते थे और मामले की जांच कराना चाहते थे. राजवीर सिंह ने खुद ही पुलिस को फोन किया और खुद ही आनंद रंजन से कहा, "देखिए... जो होना था हो गया... क्यों हुआ... कैसे हुआ... इस की तह में ज्यादा जाने की जरूरत नहीं है...

"हां, अगर आप को यही लगता है कि हम निहारिका की हत्या के दोषी हैं, तो बेशक हमारे खिलाफ रिपोर्ट कर दीजिए और हम को जेल भेज दीजिए...

"पर, आप को बता दें कि अगर हम जेल चले गए, तो जेल के अंदर भी वैसे ही रहेंगे, जैसे हम यहां रहते हैं. और अगर आप जेल नहीं भेजे हम को, तो आप की छोटी बेटी रिया की जिंदगी भी संवार देंगे और अगर हमारी बात का भरोसा न हो तो पूछ लीजिए अपनी बेटी से."

इतना सुनने के बाद आनंद रंजन के चेहरे पर कई तरह के रंग आते गए और जाते गए. एक बार भरी आंखों से उन्होंने रिया की तरफ सवाल किया, पर रिया खामोश रही मानो उस की खामोशी राजवीर सिंह की हां में हां मिला रही थी.

आनंद रंजन ने दुनिया देखी थी. वह बहुतकुछ समझे और जो नहीं समझ पाए, उस को समझने की जरूरत भी नहीं थी.

पुलिस आई और राजवीर सिंह के पैसे और रसूख के आगे इसे महज एक खुदकुशी का केस बना कर रफादफा कर दिया गया.

किसी को कोई हैरानी नहीं हुई, क्योंकि सभी राजवीर सिंह के जलवे को जानते थे. पर हां, आनंद रंजन के नातेरिश्तेदारों और राजवीर सिंह के पड़ोसियों को जबरदस्त हैरानी तब जरूर हुई, जब एक साल बाद ही आनंद रंजन ने रिया की शादी राजवीर सिंह से कर दी.

निहारिका के बैडरूम पर अब रिया का हक था और राजवीर सिंह की गाड़ी में रिया घूमती थी.

एक बहन ने ही दूसरी बहन के सुहाग को छीन लिया था. यह अलग बात थी कि जानतेबूझते हुए भी अपनी बेटी को इंसाफ न दिला पाने का गम आनंद रंजन सहन न कर पाए और रिया की शादी राजवीर सिंह के साथ कर देने के कुछ दिनों बाद ही उन की मौत हो गई.

कुछ दिन तो मातम का माहौल रहा, पर उस के बाद सब सामान्य हो गया. रिया पर तो जैसे कुछ फर्क ही नहीं पड़ा था. उसे तो अब भी राजवीर सिंह के साथ ऐश करना अच्छा लगता था. पर अब वह राजवीर की पत्नी थी. ●

पिछले अंक में आप ने पढ़ा था : फुलवा और दिनेश की शादी को 3 साल हो गए थे. दोनों में बेहद प्यार था. दिनेश आटा मिल में मुंशीगीरी करता था. महल्ले के मनचले फुलवा की खूबसूरती देख आहें भरते थे. एक बार लेट होने पर आटा मिल में अफसर ने दिनेश को डांट दिया. उस ने गांव जाने की ठान ली, पर फुलवा ऐसा नहीं चाहती थी. नई साइकिल खरीदी गई. ***अब पढ़िए आगे...***

नीरज कुमार मिश्रा

आखिरी भाग

आ अब लौट चलें

"कुछ ऐसा काम करो, जो जबान का स्वाद खट्टा कर के भी मन को भा जाए और मीठा का मतलब कि जब तुम मुझे देखो और मैं तुम्हें देखूं और हम लोगों का मुंह अपनेआप मीठा हो जाए," कह कर दिनेश ने फुलवा की तरफ आंख मारी.

"बेशर्म कहीं के," इतना कह कर फुलवा पीछे की ओर मुड़ी, तो दिनेश ने अपने दोनों हाथों से उस के सीने को भींच लिया और बेतहाशा प्यार करने लगा.

दिनेश के होंठ फुलवा की गरदन पर फिसल रहे थे. उस की इन हरकतों से फुलवा भी जोश में आ गई और कमरे में 2 जिस्मों के दहकने की आवाजें साफ सुनाई देने लगीं. कुछ देर बाद कमरे का बढ़ा हुआ ताप धीरेधीरे ठंडा हो गया.

सुबह हुई तो नई साइकिल पर सवार हो कर दिनेश मिल की तरफ रवाना हो गया और जाते समय बड़ी शान से फुलवा से 'बायबाय' करते हुए गया.

साइकिल के आ जाने से अब सबकुछ सही था. न ही दिनेश को किसी की डांट सुननी पड़ती थी और न ही किसी सवारी का इंतजार करना पड़ता था. इधर फुलवा को भी इधरउधर काम मिल जाता था, जिस से कामकाज की गाड़ी अब पटरी पर चल रही थी.

काम पर जाने से पहले अपनी साइकिल को रगड़ कर पोंछना दिनेश के रोजमर्रा के काम में शामिल हो गया था.

एक तो महल्ले में फुलवा की जवानी और उस के भड़काऊ कपड़ों की चर्चा पहले से ही थी, फिर उस के काम का हुनर देख कर महल्ले के लोग उस का लोहा मान गए थे.

अब फुलवा ने अपने पति को जो नई साइकिल दिलवा दी, महल्ले में दिनेश की साइकिल चर्चा और जलन का केंद्र बनी हुई थी.

एक रविवार को दिनेश के महल्ले के एक लड़के मनोज ने दिनेश से कहा, "अरे भाई दिनेश... आज तो तुम्हें काम पर जाना नहीं है और मुझे थोड़ा तुम्हारी साइकिल की जरूरत है... अगर मिल जाती तो बड़ी मेहरबानी होती."

साइकिल मांगने की बात पर दिनेश का मूड थोड़ा उखड़ गया. उस की आवाज में तल्खी सी आ गई, "क्यों... मेरी साइकिल की भला तुम्हें क्या जरूरत आ पड़ी?"

"गोदाम तक जा कर सिलैंडर लाना है. बस यों गया और यों आया," मनोज ने कहा.

"नहीं भाई... मुझे भी आज जरा फुलवा को ले कर अस्पताल तक जाना है... इसलिए साइकिल तो मैं नहीं दे पाऊंगा."

दिनेश के इस तरह मना कर देने से मनोज को काफी निराशा हुई और वह मुंह लटका कर वहां से चला गया.

'साइकिल न हो गई मानो कोई ठेला हो गया... जिस पर सिलैंडर लाद देंगे... अरे, इतना भारी सिलैंडर मेरी साइकिल के कैरियर को न पिचका देगा भला... महल्ले में और लोग भी तो हैं, उन की साइकिल मांगो जा कर,' बुदबुदा रहा था दिनेश.

बस कुछ इसी तरह से कट रही थी फुलवा और दिनेश की जिंदगी, अपनी ही दुनिया में मस्त, जिंदगी के हर पल का मजा उठाते हुए, पर इन की खुशियों को एक झटका सा तब लगा, जब एक दिन अचानक देश के प्रधानमंत्री ने टैलीविजन पर आ कर पूरे देश में लौकडाउन का ऐलान कर दिया.

लौकडाउन का मतलब सब कामधाम बंद, सारी दुकानें, बाजारहाट सब बंद. सारे कारखाने बंद. दिनेश की मिल भी बंद हो गई. वह भारी मन से साइकिल खड़ी कर के अपने कमरे में गया, तो फुलवा उसे देख कर ही समझ गई कि वह कुछ परेशान है.

"क्या बात है... आज क्यों मुंह लटकाए हो... किसी से लड़ाई हो गई क्या?" फुलवा ने पूछा.

"नहीं रे फुलवा... सुना है, पूरी दुनिया में कोई भयानक बीमारी फैल रही है... लोग मर रहे हैं... इसलिए सरकार ने सारे कामकाज को पूरी तरह से बंद करने का फैसला लिया है और यह सब तब तक बंद रहेगा, जब तक यह बीमारी पूरी तरह से खत्म नहीं हो जाती," दुखी मन से दिनेश ने कहा.

"सबकुछ बंद... पर, ऐसा कैसे हो जाएगा... और काम नहीं होगा तो हमें पैसे कहां से मिलेंगे... और... और हम खाएंगे क्या... मुझे तो लगता है किसी ने तुम से मजाक किया है क्या...?" फुलवा ने चौंक कर कहा.

पर, यह तो कोई मजाक नहीं था... धीरेधीरे सबकुछ बंद होने की खबर फुलवा को भी पता चल गई और उस को भी मानना पड़ गया कि हां, सबकुछ बंद हो गया है.

महल्ले में सारे मजदूर अपनेअपने घरों में ही बैठे थे और उस बीमारी को कोस रहे थे, जिस ने आ कर उन सब की जिंदगी पर ही एक सवालिया निशान लगा दिया था.

सभी के साथ ही दिनेश का भी दम घुटता था. घर में राशन भी खत्म हो रहा था. जब मुसीबत आई, तो दिनेश को अपना गांव याद आया.

"फुलवा... मैं तो कहता हूं कि चलो, अपने गांव लौट चलते हैं..."

पर गांव जाने का नाम सुनते ही फुलवा उछल पड़ी, "गांव... गांव जा कर का करेंगे? यहां जमीजमाई गृहस्थी है... इसे छोड़ कर कहां जाएंगे..."

"अब यहां शहर में भी क्या रखा

है... मालिक पगार भी नहीं दे रहा है... अब हम यहां कितने दिन खाएंगे... और क्या खाएंगे... गांव में हमारी जमीन भी है... छोटा भाई उस पर खेती करता है... उसी पर हम भी कुछ उगा लेंगे..." परेशान होते हुए दिनेश ने कहा.

शहर में लौकडाउन हो गया था. सबकुछ ठप हो गया था. बहुत सारे मजदूर अपनेअपने गांव को चल पड़े थे.

सरकारी तंत्र भी इन मजदूरों के पलायन को व्यवस्थित कर पाने में पूरी तरह से नाकाम रहा था, इसलिए कई मजदूरों के जत्थे पैदल ही अपने गांव की ओर चल पड़े थे. इस दौरान उन मजदूरों के साथ कई दुखद हादसे भी हो चुके थे.

दिनेश को शहर में रहना रास नहीं आ रहा था. वह बस अपने गांव पहुंच जाना चाहता था. पर फुलवा शहर में ही रहने की बात पर अड़ जाती और दोनों में मनमुटाव की नौबत आ जाती.

दिनेश ने भी शहर में ही रह कर लौकडाउन खुलने का इंतजार किया, पर हालात दिनोंदिन खराब ही होते दिख रहे थे. रोजगार बंद हो गए थे और खानेपीने का सामान भी महंगा हो रहा था.

काम पर जाने के लिए बड़े अरमानों से लाई गई साइकिल भी अब धूल खा रही थी और महल्ले में चारों तरफ मरघट सा सन्नाटा छाया रहता था.

अब दिनेश के चेहरे पर पहले वाली चमक नहीं रही. पगार पहले से ही बंद हो गई थी और घर के हालात भी खराब हो गए थे.

कुछ दिन और बीत गए और उस की उदासी की वजह गांव न जा पाना थी. इस वजह को फुलवा जान गई तो उस ने अपनी जिद छोड़ने की सोची.

"सुनोजी... मुझे लगता है कि अब हम लोगों को गांव ही लौट जाना चाहिए... हमारे लिए शहर में अब कुछ नहीं बचा है..."

फुलवा की यह बात सुन कर दिनेश खुशी से झूम उठा और फुलवा से बोला, "हां फुलवा, मुझे पूरा यकीन था कि तुम जरूर मान जाओगी. हम कल सुबह ही गांव निकल जाएंगे."

"पर ट्रेन... बस... सब तो बंद हैं... फिर हम जाएंगे कैसे?" फुलवा ने वाजिब सवाल किया.

"अरे, उस की चिंता तू क्यों करती है... मेरे बहुत से साथी तो अपने परिवार के साथ पैदल ही गांव लौट गए हैं. जब वे पैदल जा सकते हैं, तो मैं और तुम साइकिल से क्यों नहीं...?" दिनेश ने साइकिल की ओर इशारा करते हुए कहा.

"साइकिल से कैसे गांव जाएंगे?" फुलवा चौंकी.

"अरे, तू चिंता मत कर... मैं अपना सारा सामान मकान मालिक की गाड़ी के गैराज में रख दूंगा और बाद में जब सब ठीक हो जाएगा, तो सामान ले जाऊंगा..." दिनेश ने सारा प्लान बता दिया.

"ठीक है, फिर हमें अभी से सामान रखने की तैयारी शुरू करनी होगी," फुलवा ने कहा.

दोनों पतिपत्नी ने अपना हर सामान रखना शुरू कर दिया था और शाम तक सारा सामान मकान मालिक के गैराज में रख दिया गया. हालात ठीक होने पर सामान हटा लेने की बात भी दिनेश ने मकान मालिक को बता दी.

दिनेश ने साइकिल को साफ की और खापी कर दोनों जल्दी सो गए, क्योंकि अगली सुबह ही उन्हें गांव जाना था.

सुबह उठ कर नहाधो कर दोनों तैयार हो गए, फुलवा ने एक छोटा सा कंधे पर लटकाने वाला बैग साथ ले लिया था.

एक ओर फुलवा का मन भारी हो रहा था, तो वहीं दूसरी ओर दिनेश खुश हो रहा था कि अब उसे शहर की नौकरी में किसी की डांट नहीं खानी पड़ेगी.

दोनों कमरे से उतर कर नीचे पहुंचे, जहां साइकिल खड़ी होती थी, लेकिन साइकिल तो वहां से नदारद थी.

दिनेश ने चौंकते हुए इधरउधर खोजा, पर साइकिल वहां नहीं थी. साइकिल के खड़े होने की जगह पर एक ईंट के टुकड़े से दबा कर एक परचानुमा कागज जरूर रखा था. फुलवा ने उसे खोला और पढ़ने लगी :

'दोस्त दिनेश... उस दिन मेरे मांगने पर तुम ने मुझे साइकिल तो नहीं दी... मैं ने उस बात का बुरा नहीं माना... पर सही माने में आज मुझे साइकिल की जरूरत ज्यादा आ पड़ी है...

'तुम तो शहर के हालात जानते ही हो... अब यहां रहना बहुत मुश्किल है... तुम यह भी जानते हो कि मेरा एक दिव्यांग बेटा भी है और गांव में उस की मां अकेली हमारी बाट जोह रही है.

'एक दिव्यांग बेटे को उस की मां से मिलाने के लिए मेरा गांव जाना बहुत जरूरी है. मेरे पास गांव जाने का कोई और साधन न होने के चलते मैं तुम्हारी साइकिल चुरा कर ले जा रहा हूं.

'वापस कर पाऊंगा या नहीं... मैं नहीं जानता... उम्मीद है, तुम मुझे माफ कर सकोगे... तुम्हारा पड़ोसी मनोज.'

चिट्ठी पढ़ कर फुलवा और दिनेश की आंखों में आंसू आ गए, बस फर्क खुशी और दुख के आंसुओं का था... ●

यकृत (लिवर) सम्बन्धित रोग और उनका निदान

डॉ. निरितोष मिश्रा
बी.एम.एस.
(आयुर्वेदाचार्य)

प्रश्न-: रश्मि, अंबाला, उम्र 28 वर्ष है। मैनें जंकफूड बहुत ज्यादा खाया है। अब भूख खत्म हो गई है कुछ खाते ही पेट फूल जाता है, परामर्श दीजिये।

उत्तर-: दाल और हरी सब्जियों का ज्यादा सेवन करें, जंकफूड त्याग दें, और धन्वंतरि का पाचन अमृत सुधा (मीठा) खाना खाने के बाद 30ml लें और साथ में आरोग्य वर्धनीवटी की 2-2 गोली दिन में 2 बार लें।

प्रश्न-: अंगद सिंह, नागौर, उम्र 27 वर्ष है। मेरे चेहरे और हाथ पैरों में सुजन आ गई है, SGPT, SGOT बहुत बढ़ा हुआ बताया गया है।

उत्तर-: अपना KFT TEST और करांओं तथा कुटकी पाउडर 200-200 मि. ग्राम शहद के साथ दिन में 2-3 बार लें और डिवाइन-9 पाउडर 2-2 ग्राम सुबह-शाम लें, और पुनर्नवारिस्ट दिन में 3 बार 10 से 15 ml पानी में मिलाकर लें।

प्रश्न-: संतोष कुमार, बाड़मेर, उम्र 47 वर्ष है। मैं शराब बहुत पीता था, अब छोड़ दी है किन्तु अल्ट्रासाउण्ड मे लिवर बढ़ा हुआ बताया गया है।

उत्तर-: तलाभुना चिकनाई युक्त भोजन बंद करें, धन्वंतरि का यकृत शोधन 5-5 चम्मच आधा गिलास पानी में मिलाकर खाना खाने के उपरांत पियें, 3 माह बाद पुनः अल्ट्रासाउण्ड करायें।

प्रश्न-: राजकुमार, लुधियाना, उम्र 35 वर्ष है। मेरे पेट में दर्द रहता है तथा कुछ खाते ही लैट्रीन जाना पड़ता है, अल्ट्रासाउण्ड में फैटी लिवर बताया गया है।

उत्तर-: डिवाइन-9 पाउडर 2-2 ग्राम सुबह-शाम लें, दूध मलाई उतरा हुआ लें तथा हल्का भोजन करें, तथा धन्वंतरि का यकृत शोधन 10-10ml खाना खाने के तुरन्त बाद लें।

प्रश्न-: सोहन महेश्वरी, मथुरा, उम्र 42 साल है। मुझे टाइफाइड हुआ था और अंग्रेजी दवा चली थी पर उसके बाद से भूख खत्म हो गई और पीलिया हो गया है।

उत्तर-: आप पीना उबालकर ठंडा करके पीजियें या फिल्टर किया गया पानी लें, यकृत शोधन 5-5 चम्मच तथा पाचन अमृत सुधा (मीठा) मिलाकर खाना खाने के तुरन्त बाद सेवन करें, दिन में 2 बार पुर्ननवा अर्क का 15-15ml प्रयोग करें।

उपलब्ध न होने पर 9258040152 पर प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक आर्डर बुक करायें।

सभी प्रकार की आयुर्वेदिक औषधियों के कुछ विक्रेताओं के नम्बर

बिहार–0612–2673987, झारखण्ड–9771390698, उ.प्र.–लखनऊ–9415788958, इलाहाबाद–9236011955, कानपुर–9839940626, आगरा–9412166680, अलीगढ–9837843430, गोरखपुर–9336400742, बरेली–इमदाद हुसैन–9411070751, शाहजहांपुर–9450442978, मेरठ–9837270117, 0124135025, 9212771106, कोलकाता–09432485534, 07278040890, दिल्ली–9810386276, 9899161855, राजस्थान–9413381007, 9413381008, छत्तीसगढ–9301315674, मध्य प्रदेश–उज्जैन–09826284858, इन्दौर–0731–2463274, 9098144825, भोपाल–09893257976, जबलपुर–09424686874, पंजाब–जालंधर–01679–231670, 501670, 9417331070, हरियाणा–फरीदाबाद–09812446363, रोहतक–09812341685, 09466278067, 08901387927, फरीदाबाद–01292417565

अपने प्रश्न 9358256552 पर वाट्सअप या एस.एम.एस. के द्वारा सुबह 10 से सायं 5 बजे तक पूछे, जिनके जवाब अगले अंक में दिये जायेंगे।

पटकनी

डा. गीता यादवेंदु

आज डीएम साहब की मीटिंग में अनीता की समीर से मुलाकात हुई. उस का तबादला यहीं नोएडा में हो गया है. डीएसपी हो गया है वह. अनीता नार्कोटिक्स महकमे में अफसर है. वह डीएम, कमिश्नर वगैरह के साथ मीटिंग में अकसर शामिल होती है. आज समीर मिला, डीएसपी समीर. खूब जंच रहा था. पुलिस अकादमी में ट्रेनिंग के दौरान वह उस से पहली बार मिली थी. समीर उस से सीनियर था और ट्रेनिंग पूरी कर के उसे पोस्टिंग पहले मिली, जबकि अनीता को बाद में.

अनीता की पहली पोस्टिंग नोएडा में ही हुई. प्रशासनिक बैठकों के दौरान अकसर ही समीर के साथ उस की मुलाकातें होने लगीं.

समीर शानदार शख्सीयत का मालिक था, अच्छे ओहदे पर था. पत्नी भी प्रशासनिक सेवाओं में हो, ऐसा वह चाहता था.

अनीता को भी समीर पसंद ही था. बस, अपनी बात कहने में उसे जो हिचकिचाहट थी, वह खुद समीर ने उसे प्रपोज कर के पूरी कर दी थी. दोनों के परिवार वालों को भला क्या एतराज हो सकता था. चट मंगनी पट ब्याह हो गया.

"जैसा मैं चाहता था वैसा ही हुआ. मुझे तुम जैसी लड़की ही पत्नी के रूप में चाहिए थी," समीर कह रहा था.

"कैसे?" अनीता ने पूछा.

"नई शादी, मनपसंद जीवनसाथी..." समीर का मन खुशियों की तरंगों में डूबा हुआ था.

"अरे, तुम नार्कोटिक्स जैसे कमाऊ विभाग में हो और मैं प्रशासनिक अफसर. दोनों मिल कर खूब कमाएंगे," समीर तपाक से यह बोला, तो अनीता के मन की खुशी बुझ सी गई.

अनीता का महकमा 'नार्कोटिक्स' घूसखोर और पैसा कमाने की चाहत रखने वालों के लिए 'सोने का अंडा देने वाली मुरगी' के समान था. नौजवान पीढ़ी की नशे की लत के चलते चरस, गांजा, अफीम, हेरोइन जैसी नशीली चीजों की तस्करी को बढ़ावा मिलता था और तस्करों को सरपरस्ती देने के एवज में नार्कोटिक्स महकमे के अफसरों की लाखों की कमाई.

पर, अनीता का टारगेट कभी ऐसा नहीं रहा. उलटे, वह तो देश की नौजवान पीढ़ी को बरबाद कर रहे इस नशे के कारोबार पर रोक लगाना चाहती थी. पर समीर की पैसे की हवस से उसे निराशा सी महसूस हुई. भीतर से लगा, जैसे जीवनसाथी चुनने में कोई गलती तो नहीं हो गई.

'अपनीअपनी सोच है, समीर अपना काम करेगा, मैं अपना,' यह सोच कर अनीता ने सिर झटक दिया. दोनों अपनेअपने काम में बिजी हो गए और जिंदगी चलने लगी.

एक दिन समीर रात में देर तक घर नहीं आया. अनीता ने फोन किया, तो जवाब मिला, 'कुछ अर्जेंट काम आ गया है, देर से घर आऊंगा.'

रात के 10, फिर 12 और फिर 2 बज गए, 2 बजे के बाद समीर घर आया नशे की हालत में लड़खड़ाते हुए. अनीता को धक्का लगा. एक डीएसपी रैंक का अफसर और उस का पति इस तरह नशे में लड़खड़ाते हुए घर आ रहा था. उसे बड़ी शर्म आई.

अनीता के मुंह से निकल ही गया, "तुम इतनी शराब पीते हो, मुझे तो कभी पता नहीं चला."

"तो क्या, अब शराब भी तुझ से पूछ कर पीऊंगा? एक तो कुछ कमातीधमाती नहीं है, ऊपर से बातें और बनाती है."

समीर का यह रूप देख कर अनीता के पैरों तले जमीन खिसक गई. वह तो उसे मारने पर उतारू हुआ जा रहा था. नशे में लड़खड़ाता हुआ ही वह सो गया. नफरत और बेइज्जती से दुखी अनीता एक पल भी न सो सकी.

पुलिस महकमे का एक सीनियर अफसर, उस का पति उस से भ्रष्टाचार कर पैसा कमाने को कहता है और मना करने पर शराब पी कर उस से गलत बरताव भी शुरू कर रहा है.

अनीता को समीर की इस हिमाकत पर बड़ा गुस्सा आया. उस के भीतर का अफसर जाग उठा. मन किया, जगा कर 2 झापड़ दे इस आदमी के. उपपुलिस निरीक्षक जैसे जिम्मेदार पद पर रह कर वह अपने फर्ज से भाग रहा था और भ्रष्टाचार की राह पकड़ रहा था. अनीता दुखी हो कर रह गई. उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे.

सुबह जब समीर सो कर उठा, तो उस का नशा उतरा हुआ था. रात का वाकिआ याद आया, तो समझ गया कि अब अनीता को मनाना पड़ेगा. बेचारा, रोना सा मुंह बना कर धीरे से अनीता के पास पहुंचा और उस के दोनों हाथ पकड़ लिए, "मुझे माफ कर दो अनीता. कल रात साथियों के साथ पार्टी हो गई थी. उन्हीं लोगों ने पिला दी. आगे से कभी ऐसा न होगा, तुम्हारी कसम."

अनीता कुछ न कह सकी, पर इस आदमी पर से उस का वकील उठने लगा था. उस की आंखों में सचाई की झलक न हो कर धूर्तता और कांइयापन झलकता था. शांति बनाए रखने के लिए कुछ सोच कर अनीता चुप रह गई.

उन की शादीशुदा जिंदगी जबरदस्ती की गाड़ी सी चल रही थी. समीर तनिक न बदला, बल्कि और बेशर्म होता गया. चला जाता तो 2-2 दिन तक घर न आता. पूछने पर डिपार्टमैंट के काम से दौरे पर जाना बता देता. कभी कह देता कि बदमाशों पर दबिश डालनी है, उन की ही खोजखबर इकट्ठी की जा रही है. कईकई रातों को घर न आना तो अब उस का अकसर का काम बन गया था. पूछने पर वह काट खाने को दौड़ता, कभीकभी हाथ भी उठा देता.

अनीता की इज्जत और पद का कोई मोल नहीं है उसे. अनीता को समझ नहीं आता कि इस आदमी को पहचानने में उस

से इतनी बड़ी भूल कैसे हो गई. रोनेधोने से कोई फायदा नहीं था. उसे पता करना था कि आखिर समीर किस के साथ रहता है और किस लालच में फंसा है. एक जिम्मेदार अफसर का ऐसा गैरजिम्मेदाराना आखिर उस के फर्ज के प्रति भी लापरवाही थी और इस की सजा भी किसी दिन उस को ही मिलनी थी. अनीता ने जी कड़ा कर कुछ ठान लिया था.

आज समीर का मूड कुछ ठीक लग रहा था. वह अपने दफ्तर जाने को तैयार हो रहा था.

"आज हमारे डिपार्टमैंट को दवा विक्रेताओं पर रेड डालनी है. मैं बहुत बिजी रहूंगी. तुम कब तक घर आ जाओगे?" अनीता ने यों ही बात शुरू करने को पूछा.

"मैं कभी आऊं, तुम्हें क्या? तुम अपना काम करो और मेरे काम में टांग मत अड़ाया करो. वैसे भी, तुम्हें कौन सा कुछ कमानाधमाना है," उस ने मुंह बनाते हुए कहा.

अनीता ने सोचा, फुजूल में ही बात की. वैसे भी, घर के मेन हिस्से की चाबी तो दोनों के पास थी ही, और नौकरचाकर भी तो थे घर में.

समीर को मिला सरकारी बंगला काफी बड़ा था. खानसामा, माली, चपरासी तो हमेशा रहते ही थे और सरकारी बंगलों में चोरीचकारी का भी कोई डर नहीं था.

हकीकत तो यह थी कि अनीता इस बहाने समीर से बात शुरू करना चाहती थी, पर उस अड़ियल आदमी ने तो उस के मुंह का स्वाद ही खराब कर दिया. आखिर वह भी एक पीसीएस अफसर थी और अपने स्वाभिमान को यों तारतार होते देखना उसे गवारा न था. अब वह समीर को एक पत्नी की नजर से नहीं, बल्कि एक इंवैस्टिगेटिंग अफसर की नजर से देख रही थी.

"नमस्कार मैनेजर साहब," अनीता ने मुसकरा कर कहा.

"नमस्कार अनीताजी, आज आप कैसे?" मैनेजर ने थोड़ी हैरानी जताई.

"जी, उन्हें प्रशासनिक कामों के चलते फुरसत नहीं मिल पाती है, मैं भी बिजी रहती हूं. पर आज मेरे पास समय था, इसलिए आ गई. दरअसल, मुझे अपना लौकर खोलना था."

बैंक अकाउंट और लौकर जौइंट थे, तो अनीता का हक था अपना लौकर देखना. मैनेजर साहब ने रजिस्टर मंगा कर अनीता के दस्तखत और समय की एंट्री करा कर उसे लौकर रूम में भेज दिया.

बैंक कर्मचारी बैंक की चाबी से अनीता की चाबी मिलवा कर लौकर ओपन कर अनीता को लौकर रूम में छोड़ कर चला गया.

इस से पहले अनीता समीर के साथ बैंक तभी आई थी, जब लौकर खुलवावा था. थोड़ी सी अपनी ज्वैलरी उस ने लौकर में रख छोड़ी थी. उस के बाद वह नहीं आई थी. आज किसी तरह से लौकर की चाबी समीर की अलमारी से ले कर वह यहां आई थी. उस का दिल धड़क रहा था. कांपते हाथों से उस ने लौकर का दरवाजा खोला.

अनीता की आंखें खुली की खुली रह गईं. लौकर में 2 रिवौल्वर और रुपया भरा हुआ था. समीर ने ही जिद कर के बड़ा लौकर लिया था. अनीता ने अभी उसे वैसा का वैसा बंद कर दिया. नोट कितने थे, यह तुरंत गिनना मुमकिन न था. सो, उस ने इस समय चुप रहना ही ठीक समझा.

अभी उसे अपने और समीर के जौइंट अकाउंट की भी छानबीन करनी थी. अनीता ने खुद को रुपएपैसे के हिसाब से इतना अलग कर रखा था कि समीर जो भी घालमेल कर रहा था, उसे कुछ पता ही नहीं था. पढ़ीलिखी हो कर भी वह इतनी लापरवाह कैसे हो सकती है, उसे अपने इस अनजानेपन पर बड़ा गुस्सा आया.

समीर पर बहुत ज्यादा यकीन का ही नतीजा था कि आज उसे यह दिन देखना पड़ रहा था. उस के नाम से समीर अपना भ्रष्टाचार का धंधा चला रहा था और उसे कुछ मालूम ही न था. उस से ज्यादा होशियार, जागरूक और सयानी तो कम पढ़ीलिखी घरेलू औरतें होती हैं. खैर, अब आगे क्या करना है, अनीता सोचने लगी, फिर से बैंक जा कर अपने खाते की डिटेल्स लेनी होगी.

अनीता समय पर घर पहुंच गई थी. समीर हमेशा की तरह देर रात घर आया. अनीता ने अपनी तरफ से समीर को तनिक भी आभास न होने दिया कि वह क्या देखसमझ चुकी है. उसे बहुत सावधानी से फूंकफूंक कर कदम रखने थे, समीर जैसे शातिर आदमी की पूरी सचाई जो जाननी थी.

सवेरे समीर उठा, तो उस का मूड तो ठीक था, पर अनीता से तो जैसे उसे कोई मतलब ही नहीं था.

"कब तक आओगे लौट कर?"

"प्रशासनिक अधिकारी हूं, हजारों काम होते हैं. कोई खाली तो घूमता नहीं रहता. जब काम निबट जाएगा, आ जाऊंगा," हमेशा की तरह उलटे व कड़वे बोलता.

वैसे, अनीता को भी अब उस से बोलने में कोई दिलचस्पी न थी. वह तो माहौल को सामान्य दिखाने के लिए औपचारिक सवाल कर रही थी,

आयुर्वेद से आयुष्वमान

रतन्स आयुर्वेदिक समाधान

प्र. मेरी समस्या यह है कि मुझे नींद तो अच्छी आती है पर मैं नींद में खर्राटे लेने की समस्या से ग्रस्त हूं। उपचार सुझाएं। –के. खरे, चुल.

उ. खर्राटे मनोशारीरिक विकृतियों के लिए ज़िम्मेदार हो सकते हैं। समस्या हेतु आप **'स्नोरऑफ'** कैप्सूल रोज़ाना रात को सोते समय नियमित रूप से सेवन कर सकते हैं।

प्र. मैं गौरवर्णीय हूं परन्तु बीते कुछ वर्षों से मेरे चेहरे पर कालापन आता जा रहा है। उपचार सुझाएं। –अर्पिता, हैदराबाद.

उ. त्वचा की परतों को दमकाने के लिए आप रोज़ दो बार चेहरे को हल्के कुनकुने पानी से अच्छी तरह साफ़ कर हर्बल **'सुगंधा वर्ण निखार क्रीम'** चेहरे पर लगा सकते हैं। सभ्र हो तो केमिकल युक्त सौन्दर्य प्रसाधनों से भी बचें। त्वचा को सूर्य विकिरणों से भी बचाएं।

प्र. मेरी पत्नी के शरीर में उचित आकर्षण की कमी है, कोई योग्य उपाय बताएं। –एक पाठक, चुरू.

उ. कमज़ोरी, कुपोषण, अवसाद आदि के कारण भी ऐसा हो सकता है। समस्या के लिए उन्हें **'सुडोल'** बॉडी टोनर कैप्सूल १-१-१ रोज़ाना दिन में तीन बार ३ महीने तक सेवन करवा सकते हैं। साथ ही **'सुडोल'** बॉडी टोनर जैल भी यूज़ कर सकते हैं।

प्र. मेरा शारीरिक विकास मेरी आयु के अनुरूप नहीं है। समस्या हेतु कोई उपचार बताएं। –चिराग, कोलकाता.

उ. एक अच्छी शख्सियत में शारीरिक विकास अहम होता है। शारीरिक विकास कई फ़ैक्टर्स जैसे-उम्र, जीन्स, वातावरण आदि पर निर्भर होता है। आप चाहें तो पाचन क्रिया ठीक कर ग्रंथियों को सक्रिय करने हेतु **'हाईटॉप'** सिरप सुबह-शाम नियमित सेवन कर सकते हैं। नियमित व्यायाम करें एवं पौष्टिक भोजन लें।

प्र. मुझे बालों की जड़ें मज़बूत बनाने के लिए कोई आयुर्वेदिक उपाय बताएं। –शेखर, इन्दौर.

उ. बालों के उचित पोषण के लिए आप नियमित **'केश वरदान'** हेयर रिवाइटलाइज़र तेल बालों में प्रयोग कर सकते हैं।

प्र. मेरा ८ वर्षीय पुत्र वैसे तो स्वस्थ है, मगर रात को नींद में बिस्तर गीला कर देता है। कोई योग्य उपचार सुझाएं। –बबीतादेवी, देहरादून.

उ. उनकी समस्या हेतु आप उन्हें **'बेडवेट'** सिरप २-२ चम्मच दिन में दो बार नियमित रूप से सेवन करवा सकते हैं। आवश्यकता महसूस हो तो मनोचिकित्सक की सलाह लें।

प्र. मेरी बेटी खाना तो अच्छा खाती है फिर भी उसकी शरीर प्रकृति अच्छी नहीं है। उसके लिए उपचार सुझाएं। –प्रमोद, धेन्कनाल.

उ. आप उन्हें आयुर्वेदिक दवाओं से युक्त **'वेटलिफ्टर'** गोल्ड २-२ चम्मच सुबह-शाम एक गिलास दूध के साथ तीन से चार माह नियमित रूप से सेवन करवा सकते हैं।

प्र. मेरी आयु ४७ वर्ष है, मेरी समस्या यह है कि कम खाने के बाद भी मुझे शरीर में फूलापन महसूस होता है। आयुर्वेदिक उपचार बताएं। –बी. पटेल, नई दिल्ली.

उ. नाश्ता एवं भोजन ठीक से एवं समय पर लें, फास्ट फूड एवं अधिक वसा लेने से बचें। साथ ही **'ओवेरिड'** कैप्सूल २-२ सुबह-शाम तीन माह नियमित सेवन कर सकते हैं।

प्र. मैं बोलते समय पहले अक्षर को देर तक खिंचता हूं। किसी से भी बात करने में झिझक महसूस होती है। समस्या के लिए उपचार बताएं। –हितेश, अहमदाबाद.

उ. उपरोक्त समस्या के लिए आप आयुर्वेदिक तत्वों से युक्त **'वॉईस'** सिरप २-२ चम्मच दिन में दो बार पानी के साथ नियमित ३ माह तक सेवन कर सकते हैं।

उपरोक्त सलाह रोगियों के लक्षणों को ध्यान में रखकर दी गई है. दवाओं का प्रयोग वैद्यकीय मार्गदर्शन में करें.

ताकि समीर को कोई शक न हो.

समीर के निकलते ही अनीता भी तैयार हो कर निकल ली. बैंक होते हुए अपने दफ्तर जाने की सोची उस ने. आखिर उसे अपनी नौकरी भी तो देखनी थी. खाली समीर की जांचपड़ताल में ही तो नहीं लगी रह सकती थी वह.

जिन 2 बैंकों में उस के खाते थे, उन में एक तो सामान्य था, जिस में कि उस की तनख्वाह आती थी. उस खाते में सब सही था. एक और अकाउंट था, अनीता का जिसे वह बहुत कम इस्तेमाल करती थी. सालों पहले अपनी सेविंग्स जोड़ने को खुलवाया था, जो कि उसी बैंक में था, जिस में लौकर था.

अनीता ने उस खाते को भी देखने का फैसला लिया. घर से पासबुक ले कर चली थी, जिस में सालभर से कोई ऐंट्री नहीं करवाई थी. बैंक पहुंच कर ऐंट्री मशीन में डाल कर जब लेनदेन का हिसाब देखा, तो उस के होश उड़ गए. खाते में करोड़ों रुपए का लेनदेन था.

अनीता की सब से बड़ी खूबी यह थी कि वह जोश में नहीं आती थी. वह सोचसमझ कर, ठंडे दिमाग से ही फैसला लेती थी, वरना नार्कोटिक्स जैसा खतरनाक विभाग, जहां रोजाना नशीली दवाओं, नशीली चीजों की तस्करी होती है, न संभाल पाती.

सीधे बैंक मैनेजर की मिलीभगत के बिना उस का पति उस के खाते से ऐसा फर्जीवाड़ा न चला रहा होता.

ऐसे में मैनेजर से मिल कर समीर की पोल खोलने का इरादा बेकार था, क्योंकि मैनेजर निश्चित ही समीर की ही मदद करता.

बैंक से औफिस जा कर, फिर शाम को अनीता जल्दी ही घर आ गई. घर की तलाशी लेते समय अलमारियों को खंगाल डाला. एक दराज में समीर की एक डायरी मिली, जिस में कुछ लोगों के फोन नंबर थे. अनीता ने जल्दी से वे नंबर अपने पास नोट कर लिए.

रात को समीर के आने के बाद तो कुछ कर नहीं सकती थी, इसलिए समय रहते होशियारी से सब काम करना था.

समीर की डायरी से मिले नंबरों को मिस्ड कौल के बहाने मिला कर देखा, तो दोनों नंबर औरतों के थे.

'तो क्या समीर के दूसरी औरतों से भी ताल्लुकात हैं?' अनीता सोचती रह गई, पर अब उसे कुछ भी अजूबा नहीं लग रहा था.

समीर जैसा आदमी किसी भी हद तक गिर सकता था. इस बात को अब वह अच्छी तरह समझ चुकी थी.

नारकोटिक्स महकमे की अफसर अपनी टीम के साथ जांच करने आई है, यह जान कर समीर की महिला दोस्त कुछ घबराई. पर तुरंत ही वह सचेत हो गई. अनीता भी पीछे हटने वाली नहीं थी. पूछताछ के दौरान उस ने लीला नामक उस औरत के मुंह से सचाई उगलवा ही ली. समीर उसे धोखा दे रहा था. घूस और रिश्वत की कमाई उस के खातों में डलवा कर वह खुद बचा रहना चाहता था. मौका पड़ने पर वह उसे फंसा भी देता, इस में भी अनीता को बिलकुल भी शक न था.

लीला को मुंह बंद रखने की सीख दे कर अनीता ने छोड़ दिया. लीला भी उस के पद और रसूख को समझ गई और चुप रहने में ही उस ने समझदारी समझी. समीर के साथ जो होगा, वह खुद देखेगा. उसे तो खुद को बचाना और महफूज रखने में ही समझदारी लगी.

अब आगे... अनीता के मन की उधेड़बुन का कोई अंत न था... इस धूर्त और शातिर आदमी को कैसे पटकनी दे और खुद भी बची रहे...

अगले दिन से समीर और अनीता की जिंदगी में कुछकुछ सामान्य सा लगने लगा था. समीर रात को पी कर आता, तो भी अनीता कोई शिकायत न करती. कई बार तो वह समीर का घर पर ड्रिंक बनाने में साथ भी देने लगी थी.

अब समीर को उस से कम शिकायत रहने लगी थी. अनीता ने उस की ऐयाशियों से आंखें मूंद ली थीं. उसे कोई शिकायत न थी कि समीर घर के बाहर क्या करता है, किस से मिलता है. उसे क्या करना, बस, घर में शांति बनी रहे.

ऐसे ही 6 महीने बीत गए. समीर अकसर शराब पी कर आता. महकमे में उस की इमेज खराब हो गई थी. अकसर वह औफिस भी पी कर नशे में पहुंच जाता. एक भ्रष्ट और ऐयाश अफसर के रूप में अपने महकमे में उस की बदनामी खूब फैल गई थी.

समीर का अपने ऊपर काबू न रहा था. औफिस जाना छोड़ दिया था उस ने और डिप्रैशन का शिकार हो गया था. दिनरात घर पर पड़ा रहता.

एक दिन अखबार में खबर निकली, 'डीएसपी समीर कुमार अपने घर में मरे पाए गए. ज्यादा नशा और डिप्रैशन मौत की वजह.' ●

छम्मक-छल्लो
Rajesh na
एक दिन बाजार में...
छम्मक अर्लिंग, यह लो तुम्हारी पसंदीदा आइसक्रीम.
अरे वाह, थैंक्स बेबी.
सिर्फ थैंक्स से काम नहीं चलेगा.
अच्छा... तो क्या मेरे बाबू को एक चुम्मा चाहिए?
मजाक मत कर... इस में से आधी आइसक्रीम मुझे भी दे.
आयं...
FRESH FRUIT

बेटियां किसी से कम नहीं - करणवीर शर्मा

एक गैरफिल्मी परिवार से ताल्लुक रखने वाले करणवीर शर्मा ने 16 साल पहले प्रोडक्शन विभाग में हर महीने 2,000 रुपए की पारिश्रमिक राशि से काम करना शुरू किया था, पर 6 साल बाद उन्हें बुला कर फिल्म 'साड्डा अड्डा' में हीरो बना दिया गया. तब से ले कर अब तक वे फिल्मों और वैब सीरीज में लगातार ऐक्टिंग करते आ रहे हैं. अब वे 'स्टार प्लस' पर नए टैलीविजन सीरियल 'शौर्य और अनोखी की कहानी' में बतौर लीड कलाकार नजर आ रहे हैं. पेश हैं, करणवीर शर्मा से हुई लंबी बातचीत के खास अंश :

शांतिस्वरूप त्रिपाठी

अपने अब तक के कैरियर को आप किस तरह से देखते हैं?

मैं पिछले 16 सालों से काम कर रहा हूं. मैं गैरफिल्मी परिवार से हूं, इसलिए जब बौलीवुड में मेरा सफर शुरू हुआ था, तब मैं ने 2,000 रुपए में प्रोडक्शन विभाग में काम करना शुरू किया था.

फिर एक दिन लिंटास ने मुझे बुलाया और फिल्म 'साड्डा अड्डा' में ऐक्टिंग करने का मौका दे दिया. इस के लिए मुझे रोजाना 15,000 रुपए मिले थे. मेरा किरदार अच्छा था, इसलिए मैं ने यह फिल्म की थी.

उस के बाद मैं ने 'जिद', अजहर', 'शादी में जरूर आना', 'ब्लैंक' जैसी फिल्में और 'सिसासत', '24', 'गर्ल इन द सिटी', 'हक से' जैसी वैब सीरीज कीं. अब मैं 'स्टार प्लस' का सीरियल 'शौर्य और अनोखी की कहानी' कर रहा हूं.

क्या आप इसे अपने कैरियर का टर्निंग पौइंट मानते हैं?

मेरे लिए हर फिल्म और हर वैब सीरीज कैरियर में टर्निंग पौइंट रही है. मैं हमेशा कुछ नया करने की कोशिश में रहता हूं, पर हम यहां योजना बना कर काम नहीं कर सकते.

सीरियल 'शौर्य और अनोखी की कहानी' से टैलीविजन पर वापसी के पीछे कोई खास वजह रही है?

मुझे लगा कि 'शौर्य और अनोखी की कहानी' कर के मैं आगे जा सकता हूं. दूसरी बात यह कि टैलीविजन सीरियल में ऐसा बहुत कम होता है कि हीरो के नाम पर सीरियल का नाम हो, तो मुझे यह प्लस पौइंट लगा. मुझे कहानी व किरदार अच्छा लगता है, तो मैं उसे तुरंत स्वीकार कर लेता हूं.

इस के अलावा मैं ने लंबे समय से खुद को रोमांटिक किरदार में नहीं देखा था, पर इस में वह मौका भी मुझे मिला है.

सीरियल 'शौर्य और अनोखी की कहानी' क्या है?

यह सीरियल एक साधारण लड़की की कहानी है, जो मर्दवादी समाज और रूढ़िवादी सोच के चलते आने वाली कई चुनौतियों का सामना करती है. इस में मैं ने शौर्य सभरवाल और देबतमा साहा ने अनोखी भल्ला का किरदार निभाया है.

यह सीरियल इस बात पर रोशनी डालता है कि आज के दौर की बेटियां हमारा भविष्य हैं और वे किसी से कम नहीं हैं.

शौर्य के किरदार को ले कर क्या कहना चाहेंगे?

मैं ने शौर्य सभरवाल का किरदार निभाया है, जो एक नामचीन ईस्टीट्यूट 'एसआईएसी इंस्टीट्यूट' का बोर्ड औफ डायरैक्टर है. यह उस का पारिवारिक व्यवसाय है. शौर्य का किरदार ऐसा है, जिस की इमेज गुड या बैड वाली नहीं है, वह अच्छा और बुरा दोनों तरह का है.

पिछले 10 सालों में टैलीविजन में बहुत ज्यादा बदलाव आया है. आप इस बदलाव को किस रूप में देख रहे हैं?

मैं सिर्फ इतना कह सकता हूं कि 'स्टार प्लस' की नई सोच के तहत 'शौर्य और अनोखी की कहानी' का एकदम नया कौंसैप्ट ले कर आया है, जो औरतों को सपोर्ट करता है.

'स्टार प्लस' औरतों की आजादी की हिमायती है और उसी सोच के साथ वह यह सीरियल ले कर आया है.

महिलाओं की आजादी की जो बातें हो रही हैं, क्या उस का असर आप के आसपास के समाज में नजर आ रहा है?

देखिए, आप महिलाओं को सपोर्ट करते हैं या नहीं, यह बहुत ही निजी मसला है. इस देश में मेरी तरह के लोग भी हैं, जो औरतों के मानसम्मान की लड़ाई लड़ते हैं. लेकिन समाज में पूरे बदलाव के लिए मर्दों को शिक्षित करना बहुत ज्यादा जरूरी है.

हमें अपने बेटे को सिखाना है, न कि बेटियों को. बेटियां तो सबकुछ जानती हैं. मगर मैं यह जरूर कहना चाहूंगा कि बदलाव आ रहा है, हमारी पीढ़ी के लोग लिंग के आधार पर नहीं सोचते.

कोरोना के चलते अब क्या बदलाव नजर आ रहा है?

कोरोना की वजह से हमें सुरक्षा के ढेर सारे उपाय करने पड़ रहे हैं. हमें ज्यादातर समय मास्क ही पहनना पड़ता है, जो काफी ज्यादा थका देता है. दूसरे इनसान के सामने खड़ा होने पर इनसान को अपने अंदर ही विश्वास नहीं रहता है. पर क्या कर सकते हैं, काम तो करना पड़ेगा.

सिनेमाघर खुल गए हैं. क्या आप फिल्म देखने के लिए सिनेमाघर जा रहे हैं?

देखिए, कोरोना का डर अभी लोगों के सिर से उतरा नहीं है, इसलिए दर्शक सिनेमाघर जाने से बच रहा है. लोग अभी भी घर से बाहर निकलने या सिनेमाघर के अंदर जाने में सुरक्षित महसूस नहीं कर रहे हैं.

मैं खुद भी अभी तक सिनेमाघर गया नहीं हूं, पर मुझे ऐसा लगता है कि अगर आप सारी सावधानियां बरत रहे हैं और आप कोरोना वायरस से लड़ने की क्षमता रखते हैं, तो आप का यह डर भी खत्म हो जाएगा. ●

स्टंट मास्टर जौन अब्राहम

तगड़ी कदकाठी के हैंडसम हीरो जौन अब्राहम जब फिल्मों में गुंडों को पीटते हुए खतरनाक स्टंट करते हैं, तो दर्शक खूब मजा लूटते हैं. जौन इन स्टंट में जान डालने की पूरी कोशिश करते हैं, तभी तो वे अपनी अगली फिल्म 'अटैक' में एक बाइक स्टंट करेंगे.

फिल्म 'अटैक' को लक्ष्य राज आनंद बना रहे हैं. इस फिल्म में जौन अब्राहम के साथ खूबसूरत हीरोइनें रकुलप्रीत सिंह और जैकलीन फर्नांडीस भी नजर आएंगी.

हरियाणवी बोलेंगी यामी

यामी गौतम फिल्मों से ज्यादा इश्तिहारों में नजर आती हैं. इस का यही मतलब हो सकता है कि या तो उन के पास ज्यादा फिल्में नहीं हैं या फिर वे देखभाल कर फिल्में साइन करती हैं.

अभी सुनने में आया है कि अपनी नई फिल्म 'दसवीं' के लिए यामी गौतम बहुत ज्यादा मेहनत कर रही हैं. दरअसल, फिल्म 'दसवीं' में यामी गौतम एक हरियाणवी लड़की के किरदार में नजर आएंगी, जिस के लिए वे हरियाणवी बोलना सीख रही हैं.

यामी गौतम ने बताया कि यह किरदार उन के लिए एक अलग तरह की चुनौती है और जब दर्शक उन्हें इस फिल्म में देखेंगे, तो वे चौंक जाएंगे.

ताहिर और तापसी भिड़ेंगे

ताहिर राज भसीन बड़े ही शानदार और हैंडसम कलाकार हैं, पर जब वे फिल्मों में बतौर विलेन किसी हीरोइन को परेशान करते हैं, तो बड़े ही जालिम लगते हैं. फिल्म 'मर्दानी' में उन्होंने रानी मुखर्जी को अदावगी में कड़ी टक्कर दी थी.

अब फिर ताहिर राज भसीन फिल्म 'लूपलपेटा' में हीरोइन तापसी पन्नू के साथ दिखेंगे. लेकिन वे इस फिल्म में हीरो बनेंगे या विलेन, यह अभी राज ही है, पर उन्हें फिल्म 'छिछोरे' के बाद नए अंदाज में देखना बड़ा ही दिलचस्प होगा. ●

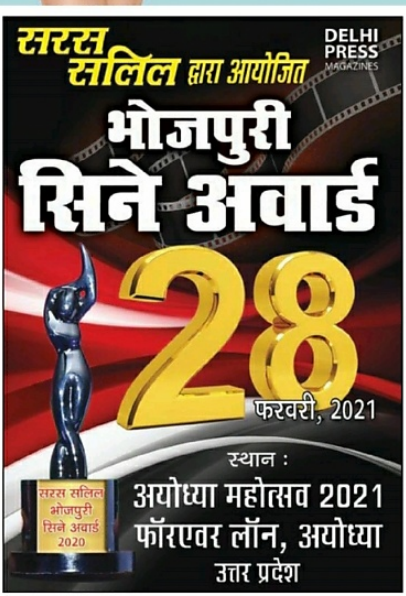

सच्ची सलाह

मैं 35 साल की शादीशुदा औरत हूं. मुझे लगता है कि मेरे पति नामर्द हैं, इसलिए मैं आज तक मां नहीं बन पाई हूं. मैं चाहती हूं कि वे डाक्टर के पास जा कर इस समस्या को बताएं, पर उन्होंने इसे अपनी इज्जत का सवाल बना लिया है, जबकि मुझे लगता है कि उन की यह कमजोरी डाक्टरी इलाज से दूर हो जाएगी. मैं क्या करूं?

आप को यह लगना कि पति ही नामर्द हैं, इसलिए संतान नहीं हो रही, एकतरफा बात है. यह क्यों मुमकिन नहीं कि कमी आप में ही हो, इसलिए दोनों ही एकसाथ काबिल डाक्टर को दिखाएं और उस की सलाह के मुताबिक इलाज कराएं. पति को प्यार से समझाएंगी तो वे मान भी सकते हैं, लेकिन न मानें तो बच्चा गोद लेने के बारे में उन से चर्चा करें.

यह ठीक है कि हर औरत की दिली ख्वाहिश अपने बच्चे की मां बनने की होती है, लेकिन ऐसे लाखों लोग हैं जो बेऔलाद हैं. कई मामलों में तो पतिपत्नी दोनों में कोई खराबी नहीं होती, इसलिए इस मामले पर ज्यादा न सोचें, बस प्यार से पति को डाक्टर के पास चलने के लिए राजी करने की कोशिश करें. ●

मैं 40 साल की शादीशुदा औरत हूं और 2 बच्चों की मां भी. मेरे पति की 3 साल पहले मौत हो चुकी है. हाल ही में हमारे पड़ोस के एक 48 साल के आदमी ने मुझ से शादी करने की बात कही है. उन का कोई नहीं है, पर मेरे बच्चे इस शादी के खिलाफ हैं. उन्हें लगता है कि इस से समाज में मेरी बदनामी होगी. मेरी भी यह शादी करने की बहुत इच्छा है, पर मेरे बच्चे ही मेरा साथ नहीं दे रहे हैं. मैं क्या करूं?

आप के बड़े होते बच्चे वही सोच रहे हैं, जो समाज ने उन्हें सिखा दिया है कि विधवा को शादी करने का हक नहीं है. आप की परेशानी असल में यह है कि आप बच्चों की मरजी के खिलाफ नहीं जा पा रही हैं. अगर उस आदमी पर आप को पूरा भरोसा है, तो बच्चों से साफ और सख्त लफ्जों में बात करें कि आप की भी कुछ जरूरतें हैं, जिन्हें यहांवहां से पूरा करेंगी तो और ज्यादा बदनामी होगी.

इस बात की कोई गारंटी नहीं कि बुढ़ापे में बच्चे आप का खयाल इस त्याग के एवज में रखेंगे ही, इसलिए आप को शादी करने से हिचकना नहीं चाहिए. वह आदमी अगर समझदार होगा, तो धीरेधीरे बच्चे भी उसे अपना लेंगे. ●

ZEE LABORATORIES

करोड़ो लोगो का आज़माया

झुर्रियां | काले घेरे | छाईया

MYFAIR

रूप संवारे, त्वचा निखारे

- क्रीम
- साबुन
- फेस वाश
- सन स्क्रीन

सम्पूर्ण कॉस्मेटिक रेंज
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध
9896134500

A Product of
ZEE LABORATORIES LTD.

Online Shopping:
www.myfair.in

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए

MultipreX™

कैप्सूल, सिरप,
ओरल ड्राप्स, पाउडर

Multivitamin, Multiminerals & Antioxidants

Advanced Formula For
Strong Immunity

रोजाना सेवन करे
9896134500
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध

प्रतिरक्षा में सुधार, विटामिन और मिनरल की कमी को पूरा कर रोगों से बचाए

Licenced to Post Without Pre Payment (REGISTERED) RNI 55680/93/DL(C)-14/1079/2021-23/U(C) 135/163/2021-23 Saras Salil (Hindi) February-II
JP.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 14 to 20, Published on 1/2/2021 Pgs.32

REVITAL H™

SUN PHARMA

बढ़ाइए इम्यूनिटी और एनर्जी

ज़िंक, 18 विटामिन्स और मिनरल्स के साथ.

भारत का नं. 1 हेल्थ फूड सप्लीमेंट*

- विटामिन सी
- ज़िंक
- नेचुरल जिनसेंग

महिलाओं के लिए भी उपलब्ध.

*IQVIA, TSA DATA MAT सितंबर '20. रिवाइटल H ओरल सॉलिड फूड सप्लीमेंट श्रेणी में नं. 1 है.

रहो चार्ज्ड

रिवाइटल H एक न्यूट्रास्युटिकल है. सेहत संबंधी फ़ायदे इंग्रीडिएंट पर आधारित हैं. इस प्रॉडक्ट का उद्देश्य किसी भी बीमारी का पता लगाना, उसका उपचार करना या उसे ठीक करना नहीं है.